महोपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत

।। श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

ऐंकारस्मृतिसावधानमनसा स्तोतुं प्रवर्ते महा
मोहापोहपरायणं जनमनोऽभीष्टार्थसार्थप्रदम्।
श्रीशङ्खेश्वरभूषण, भगवतामग्रेसरं वासव-
श्रेणीवेणिमिलत्प्रसूनपटलीमाध्वीकधौतक्रमम् ।।१।।
मूर्तिस्ते जिनराज ! राजति जगद्दारिद्र्यविद्राविणी
स्वर्योषिन्नयनोन्मदालिपटलीपेपीयमानप्रभा।
शारीरान्तरदुःखतापजनितं खेदं नयन्ती व्ययं,
वल्लिः कल्पतरोरिव त्रिभुवनप्रख्यातसौरभ्यभूः ।।२।।
कामं दर्शनतोऽपि मन्नयनयोरूल्लासमातन्वती,
मच्चेतःकुमुदं विकासयितुमप्यह्याय बद्धादरा।
मद्ध्यानार्णवपूरपूरणपटुः स्वामिंस्तवोल्लासिनी,
मूर्तिः किञ्चन चन्द्रकान्तलहरीप्रागल्भ्यमभ्यस्यति ।।३।।
मूर्तिस्ते महनीयमोहमदिरोद्गारावधूर्णद्दशां,
व्याक्षेयं परमौषधीव नियतं निर्णाशयत्यञ्जसा।
येषां लोचनगोचराश्चिरमभूद् रोमाञ्चपुष्पाञ्चिताः,
ते किं नाम नमन्ति वामनयनालावण्यलक्ष्मीजुषः ।।४।।
मूर्तिस्ते स्नपनैर्न विभ्रमभरैः सांवर्तिकैश्चुक्षुभे,
पौलोमीचललोचनाञ्चलमिलद्भ्रूभङ्गसंसर्गिभिः
आबिभ्रत्कमठोपसर्गसहनी धैर्यप्रधानक्षमा,
स्वामिंस्तत्किममन्दमन्दरगिरिस्पर्द्धासमृद्धादरा ।।५।।
धाम ध्यायसि यत् पुरा त्रिजगतीधामातिशायि स्फुरन्,
तत्सङ्क्लान्तिवशादिवेयमनिशं मूर्तिस्तवोद्योतिनी।
अङ्गुष्ठात् पुरतस्तव क्रमभवादिग्भाललीलावहं,
नोचेत् सर्वसुरासुरैः कथमहो शक्त्या जितं रूपकम् ।।६।।
अद्यावद्यकलापतापदलनक्रीडामिवातन्वती,
मूर्तिः स्फूर्तिमती लता सुरतरोर्मूर्त्ता मयोद्वीक्षिता।
ब्रह्मज्ञानकलाविलासकुशलव्यापारपारङ्गतै-,
र्योगीन्द्रैरनुभूतवैभवविभो ! तेनानुमन्ये जनैः ।।७।।
मूर्त्तिस्ते प्रविभाति मोहतिमिरप्रध्वंसभानुप्रभा,
मूर्तिस्ते भवसिन्धुमध्यनिपतद्भव्योद्धृतौ नौर्दृढा।
मूर्तिस्ते सकलैहितार्थपटलीसम्पूरणे कामगौ-,
मूर्त्तिस्ते मम तीर्थनाथ ! सततं श्रेयः श्रिये कल्पताम् ।।८।।
प्रातर्योऽष्टकमेतत् प्रमुदितचेताः प्रभोः पुरः पढति,
कष्टसहस्रं तीर्त्वा लभतेऽसौ परममानन्दम् ।।९।।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का छंद

पास शंखेश्वरा सारकर सेवकां, देव कां एवडी वार लागे,
कोडी करजोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे १
प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड असुराणने आप छोडो,
मुज महिराण मंजूषमां पेसीने, खलकना नाथजी बंध खोलो २

जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज ऊंघे,
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जग काल मोंघे ३
भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रीकमे तुं ज संभार्यो,
प्रगट पातालथी पलकमां ते प्रभु, भक्त जन तेहनो भय निवार्यो. ४
आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीन दयाल छे कोण दूजो,
'उदयरत्न' कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजणो एह पूजो ५

भाववाही स्तुतियाँ

ऐन्द्रश्रेणिनताप्रतापभवनंभव्याङ्घ्रिघ्रनेत्रामृतं,
सिद्धान्तोपनिषद्विचारचतुरै-र्प्रीत्याप्रमाणिकृता।
मूर्तिस्फूर्तिमतिसदाविजयते जैनेश्वरीविस्फूरन्,
मोहोन्मादघनप्रमादमदिरा-मत्तैरनालोकिता ।।१।।
मूर्तिस्ते जगतां महार्तिशमनी मूर्तिर्जनानन्दिनी,
मूर्तिर्वांछितदानकल्पलतिका मूर्तिर्सुधास्यन्दिनी।
संसाराम्बुनिधिं तरितुमनिशं मूर्तिर्दृढानौरियं,
मूर्तिर्नेत्रपथंगता जिनपतेः किं किं न कर्तुंक्षमः ।।२।।
नमस्ते समस्तेप्सितार्थप्रदाय, नमस्ते महार्हन्त्यलक्ष्मीप्रदाय,
नमस्ते चिदानंदतेजोमयाय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।३।।
नमस्ते जगन्नाथविश्वैकनेतः, नमस्ते महामोह-मल्लैकजेतः,
नमस्ते सतां मोक्षशिक्षाविनेतः, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।४।।
नमस्ते प्रभो पार्श्वशंखेश्वराय, नमस्ते यशोगौरगोडीधराय,
नमस्ते श्री जिराउलीमंडनाय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।५।।
श्रीमद्गुर्जरदेशभूषणमणिं सर्वज्ञताधारकं
मिथ्याज्ञानतमः पलायनविधावुद्यत्प्रभं तापिनम्।
पार्श्वस्थायुकपार्श्वयक्षपतिना संसेव्यपार्श्वद्वयं,
श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथमहमानन्देन वन्दे सदा ।।६।।
ऐन्द्रश्रेणिनतावतंसनिकर भ्राजिष्णुमुक्ताफल-
ज्योतिर्जालसदालवाललहरीलीलाचितं पावितम्।
यत्पादाद्भुतपारिजातयुगलं भाति प्रभाभ्राजितं,
श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथजिनपं श्रेयस्करं संस्तुवे ।।७।।
श्रीपार्श्वं तीर्थनाथं प्रशमरसमयं केवलानन्दयुक्तं,
वामेयं पार्श्वयक्षैं सुरवरसहितैः सेवितं भूरिभक्त्या।
यस्य स्नात्राभिषेक पृथुतरकमलै निर्जरा यादवाः स्युः
ख्यातं शंखेश्वरं तं त्रिभुवनविहितख्यातकीर्तिं नमामि ।।८।।
शंखेश्वरं प्रणिदधे प्रकटप्रभावं,
त्रैलोक्यभावनिवहावगमस्वभावम्।
भावारिवारणहरिं हरिसेवनीयं,
वामेयमीश्वरममेयमहोनिधानम् ।।९।।
जरा जरासन्धनृपेण मुक्ता,
निश्चेष्टामातेनुषी कृष्ण सैन्यम्।
पलायिता यत्स्नपनाम्बुना तं,
शंखेश्वरं पार्श्वजिनं नमामि ।।१०।।

सच्चिदानन्द संपूर्ण विश्वज्ञं विश्वपावनम्।
शंखेश्वरपुरोत्तंसं पार्श्वनाथं नमाम्यहम् ।।११।।
जय त्वं जगन्नेत्रपीयूषपात्र,
जय त्वं सुधांशुप्रभागौरगात्र!।
जय त्वं सदा मन्मनः स्थायिमुद्र,
जय त्वं जय त्वं जय त्वं जिनेन्द्र ।।१२।।
अरिहंत ! हे भगवंत ! तुझ पद पद्म सेवा मुझ होजो,
भवोभव विषे अनिमेष नयणे आपनुं दर्शन थजो,
हे दयासिंधु ! दीनबंधु ! दिव्यदृष्टि आपजो,
करी आप सम सेवक तणां संसार बंधण कापजो ।।१३।।
तारा थी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु!
माराथी नहीं अन्य पात्र जगमां जोतां जडे हे विभु!
मुक्ति मंगल स्थान तोय मुझने इच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग् रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाए घणी ।।१४।।
जे दृष्टि प्रभु दरिशन करे, ते दृष्टिने पण धन्य छे,
जे जीभ जिनवरने स्तवे, ते जीभने पण धन्य छे,
पीए मुदा वाणी सुधा, ते कर्ण युगलने धन्य छे,
तुज नाम मंत्र विशद धरे, ते हृदयने पण धन्य छे ।।१५।।
हे देव ! तारा दिलमां, वात्सल्यना झरणा भर्या,
हे नाथ ! तारा नयनमां, करुणा तणा अमृत भर्या,
वीतराग तारी मीठी मीठी, वाणीमां जादू भर्या,
तेथी ज तारा चरणमां, बालक बनी आवी चड्यां ।।१६।।
जेना गुणोना सिंधुना, बे बिन्दु पण जाणुं नहि,
पण एक श्रद्धा दिल महीं के, नाथ सम को छे नहि,
जेना सहारे क्रोड तरिया, मुक्ति मुज निश्चय सही,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचाग भावे हुं नमुं ।।१७।।
हे त्रण भुवनना नाथ! मारी, कथनी जई कोने कहुं?
कागल लख्यो पहोंचे नहीं, फरियाद जई कोने करुं?
तुं मोक्षनी मोझारमां, हुं दुःख भर्या संसारमां,
जरा सामुं पण जुओ नहीं, तो क्यां जई कोने कहुं? ।।१८।।
दया सिंधु ! दया सिंधु ! दया करजे दया करजे,
मने आ जंजीरोमांथी, हवे जल्दी छूटो करजे,
नथी आ ताप सहेवातो, भभूकी कर्मनी ज्वाला,
वर्षावी प्रेमनी धारा, हृदयनी आग बुझवजे ।।१९।।
हे प्रभु ! आनंददाता, ज्ञान हम को दीजीए,
शीघ्र सारे अवगुणो को, दूर हम से कीजीए,
लीजीए हमको शरण में, हम सदासारी बने,
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बने ।।२०।।
धन्वंतरी छो वैद्य छो, म्हारा जीवनना हे प्रभु !

भवरोगना वलगाडने मुझ दूर करजो हे विभु !
उपकार करी वीतराग मुजने ज्ञानदर्शन आपजो,
चरित्रमां निशदिन रहुं एवी सद्बुद्धि आपजो ।।२१।।
शत कोटि कोटि वार वंदन, नाथ ! मारा हे तने,
हे तरण तारणहार ! तुं स्वीकार मारा नमनने,
हे नाथ ! शुं जादु भर्या, अरिहंत शब्दोच्चारमां,
आफत बधी आशिष बने, तुज नाम लेता वारमां. ।।२२।।
रुप तारुं एवुं अद्भुत, पलक विण जोया करुं,
नेत्र तारा निरखी निरखी, पाप मुज धोया करुं,
हृदयना शुभ भाव परखी, भावना भावित बनुं,
झंखना एवी मने के, हुं ज तुज रूपे बनुं. ।।२३।।
वैराग्यनां रंगो सजी क्यारे प्रभु ! संयम ग्रहुं ?,
सद्गुण तणां शरणे रही स्वाध्यायनुं गुंजन करुं ?,
सवि जीवने दई देशना हुं धर्मनुं सिंचन करुं ?,
कर्मो थकी निर्लेप थईने, क्यारे हुं मुक्ति वरुं ? ।।२४।।
संसार घोर आपार छे, तेमां डूबेला भव्यने,
हे तारनारा नाथ ! शुं, भूली गया निज भक्तने,
मारे शरण छे आपनुं, नथी चाहतो हुं अन्यने,
तो पण प्रभु मने तारवामां, ढील करो शा कारणे ।।२५।।
कुंजर समा शुरवीर जे छे, सिंह सम निर्भय वळी,
गंभीरता सागर समी जेना हृदयने छे वरी,
जेना स्वभावे सौम्यता छे, पूर्णिमाना चंद्रनी
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं. ।।२६।।
क्यारे प्रभु तुज स्मरणथी आंखो थकी अश्रु सरे ?,
क्यारे प्रभु तुज नाम वदतां, वाणी मुज गद्गद् बने ?,
क्यारे प्रभु तुज नाम सुणतां, देह रोमांचित बने,
क्यारे प्रभु मुज श्वासे श्वासे, नाम ताहरुं सांभरे ? ।।२७।।
याचक थईने हुं मांगु छुं, हे वीतरागी ! तारी कने,
महाविदेह क्षेत्रमां जावुं मारे, श्री सीमंधरस्वामी कने,
आठ वर्ष नानी वयमां, संयम लेवुं तारी कने,
घाती अघाती कर्म खपावी, क्यारे पहोंचु तारी कने ।।२८।।
दादा तारी मुखमुद्राने, अमिय नजरथी निहाळी रह्यो,
तारा नयनोमांथी झरतुं, दिव्य तेज हुं झीली रह्यो,
क्षणभर आ संसारनी माया, तारी भक्तिमां भूली गयो,
तुज मूरतिमां मस्त बनीने, आत्मिक आनंद माणी रह्यो. ।।२९।।
सुण्या हशे पूज्या हशे, निरख्या हशे पण को क्षणे,
हे जगतबंधु ! चित्त मां, धार्या नहीं भक्ति वसे,
जन्म्यो प्रभु ! ते कारणे, दुःखभार आ संसारमां,
हा ! भक्ति ते फलथी नथी, जे भाव शून्याचारमां. ।।३०।।

१ ।। ॐ नमः पार्श्वनाथाय ।।

ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते।
ह्रीं धरणेन्द्र वैरुट्या, पद्मादेवी युताय ते ।।१।।
शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृति-कीर्ति विधायिने।
ॐ ह्रीं द्विड् व्याल-वैताल-सर्वाधि-व्याधिनाशिने ।।२।।
जया-जिताख्या-विजयाख्या-पराजितयान्वितः।
दिशां पालै-र्ग्रहैर्यक्षैर्विद्यादेवीभिरन्वितः ।।३।।
ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथतां,
चतुःषष्टिसुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ।।४।।
श्री शंखेश्वरमंडण ! पार्श्वजिन ! प्रणत-कल्पतरु-कल्प।
चूरय दुष्टव्रातं पूरय मे वांछितं नाथं. ।।५।।

२. आश पूरे प्रभु पासजी ।।

आशपूरे प्रभु पासजी, तोडे भवपास,
वामा माता जनमिया, अहि लंछन जास ।।१।।
अश्वसेन सुत सुख करुं, नव हाथनी काया,
काशी देश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आया ।।२।।
एकसो वरसनुं आउखुं, पाली पार्श्वकुमार,
पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार ।।३।।

३. जय चिन्तामणि पार्श्वनाथ

जय चिन्तामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवनस्वामी,
अष्टकर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी ।।१।।
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहिए,
प्रभु नामे भवभयतणा, पातक सवि दहिये ।।२।।
ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी, जपीएँ पारसनाम,
विष अमृत थई परिणमे, लहीए अविचल ठाम. ।।३।।

४. प्रभु पार्श्वजी ताहरुं नाम मीठुं

प्रभु पार्श्वजी ताहरुं नाम मीठुं, तिहुं लोकमां एटलुं सार दीठुं,
सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठुं ।।१।।
मन तुम पासे वसे रात दिसे, मुज पंकज नीरखवां हंस दीसे,
धन्य ते घडी नयण दीसे, भली भक्ति भावे करी विनवीजे ।।२।।
अहो ! एह संसार छे दुःखघोरी, इंद्रजालमां चित्त लाग्युं ठगोरी,
प्रभु मानीये विनंति एक मोरी, मुज तार तुं तार बलिहारी तोरी ।।३।।
सही स्वप्न जंजालने संग मोह्यो, घडीयालमां काल रमतो न जोयो,
मुधा एम संसारमां जन्म खोयो, अहो ! घृत तणे कारणे जल विलोयो ४
एतो भ्रमरलो केसुआं भांति धायो, जई शुकतणी चंचुमांहे भराणो,
शुके जंबु जाणी गले दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवडो एम वाम्यो ५
नम्यो भर्म भूल्यो रच्यो कर्म भारी, दया धर्मनी शर्म में न विचारी,
तोरी नम्रवाणी परमसुखकारी, तिहुं लोकना नाथ में नवि संभारी ६
विषय वेलडी शेलडी करीय जाणी, भजी मोह तृष्णा तजी तुज वाणी,
एहवो भलो भूंडो निज दास जाणी, प्रभु राखीये बांहीनी छायमांही ७

मोरा विविध अपराधनी कोडी सहीये, प्रभु शरण आव्या तजी लाज लहीए,
वली घणी घणी विनंति एम कहीये, मुज मानससरे परमहंस रहीए८
एम कृपा मूर्ति पार्श्वस्वामि, मुगति गामी ध्याईए,
अतिभक्ति भावे विपत्तिजावे, परमसंपत्ति पाईए,
प्रभु महिमा सागर गुण वैरागर, पास अंतरिक्ष जे स्तवे,
तस सकल मंगल जय जयारव, 'आनंदवर्धन' विनवे ९

५. सेवो पार्श्व शंखेश्वरा मन शुद्धे

सेवो पार्श्व शंखेश्वरा मन शुद्धे, नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे,
देवी-देवता अन्यने शुं नमो छो, अहो ! भव्य लोको भूलां का भमो छो. १
त्रिलोकना नाथने शुं तजो छो, पड्यां पासमां भूतने का भजो छो,
सुरधेनु छंडी अजाशुं अजो छो, महापंथ मूकी कुपंथे व्रजो छो. २
तजे कोण चिंतामणि काच माटे, ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटे?,
सुरद्रुम उपाडी कोण आंक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे. ३
किहां कांकरोने किहा मेरू शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग,
किहां विश्वनाथ किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा. ४
पूजो देव प्रभावती प्राणनाथ, सहु जीवने जे करे छे सनाथ,
महातत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेना दुःख दारिद्र दूर पलाये. ५
पामी मानुषो ने वृथा कां गमो छो, कुशीले करी देहने कां दमो छो,
नहि मुक्ति वास विना वीतराग, भजो भगवंत तजो दृष्टिराग. ६
'उदयरत्न' भाखे सदा हेत आणी, दया भाव कीजे प्रभु दास जाणी,
आज म्हारे मोतीडे मेह वूठ्यां, प्रभु पार्श्व शंखेश्वरो आज तूठ्यां. ७

६. नित्य जाप जपीये पाप खपीये - स्वामि नाम शंखेश्वरो

सकल भविजन चमत्कारी, भारी महिमा जेहनो,
निखिल आतम रमा राजीत, नाम जपीये तेहनो;
दुष्ट कर्माष्ट गंजरी जे, भविक जन मन सुखकरो,
नित्य जाप जपीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो. १
बहु पुण्यराशि देवकाशि तत्थ नगरी वणारसी,
अश्वसेन राजा राणी वामा, रुपे रति तनु सारिखी;
तस कुखे चौद सुपन सूचित, स्वर्गथी प्रभु अवतर्यो नित्य० २
पोष मासे कृष्ण पक्षे, दशमी दिन प्रभु जनमीयो,
सुरकुमरि सुरपति भक्ति भावे, मेरु श्रृंगे स्नापियो;
प्रभाते पृथ्वीमति प्रमोदे, जन्म महोत्सव अति कर्यो नित्य० ३
त्रण लोक तरुणी मन प्रमोदी, तरुण वय जब आवीया,
तव मात ताते प्रसन्न चित्ते, भामिनी परणाविआ;
कमठ शठ कृत अग्निकुंडे, नाग बलतो उद्धर्यो नित्य० ४
पोषवदी एकादशी दिने, प्रव्रज्या जिन आदरे,
सुर असुर राजी भक्ति साजी, सेवना झाझी करे;
काउस्सग्ग करतां देखी कमठे, कीध परिषह आकरो नित्य० ५
तव ध्यान धारा दृढ जिनपति, मेघ धारे नवि चल्यो,
चलित आसन धरण आयो, कमठ परिसह अटकल्यो;
देवाधिदेव नी करे सेवा, कमठने काढी परो नित्य० ६

क्रमे पामी केवलज्ञान कमला, संघ चउविह स्थापीने,
प्रभु गया मोक्षे समेतशिखरे, मास अणसण पालीने;
शिवरमणी रंगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करो नित्य० ७
भूत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोदर भय टले,
राजा राणी रमा पामे, भक्ति भावे जो मले;
कल्पतरुथी अधिक दाता, जगत माता जय करो नित्य० ८
जरा जर्जरी भूत यादव, सैन्य रोग निवारतां,
वढीयार देशे बीराजे, भविक जीवने तारता,
ए प्रभु तणा पदपद्म सेवा, 'रूप' कहे प्रभुता वरो नित्य० ९

७. श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम्

(शालिनी छन्दः)

गोडीग्रामे स्थंभने चारुतीर्थे, जीरापल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये,
वाणारस्यां चापि विख्यातकीर्तिं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।१।।
इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामादेव्या नन्दनं देववन्द्यम्,
स्वर्गे भूमौ नागलोले प्रसिद्धं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।२।।
भित्वा भेद्यं कर्मजालं विशालं, प्राप्या तं तं ज्ञानरत्नं चिरत्नम्,
लब्धामन्दानन्दनिर्वाणसौख्यं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।३।।
विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्षलक्ष्मीकलत्रम्,
अम्भो जाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।४।।
वर्षे रम्ये खड्गदोन्नागचन्द्र-संख्ये मासे माघवे कृष्णपक्षे,
प्राप्तं पुन्यैर्दर्शनं यस्य तं च, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।५।।

स्तवन सरगम

१ (राग. पंचम सुरलोकनां वासी रे...)

चित्त समरी शारदा माय रे, वली प्रणमी निज गुरुपाय रे,
गाउं त्रेवीशमो जिनराय...व्हालाजीनुं जन्मकल्याणक गाउं रे,
सोना रूपाने फूलडे वधावुं, हा...हा...रे... थाल भरी भरी मोती रे वधावुं...
व्हालाजीनुं. १
काशी देश वाराणसी राजे रे, अश्वसेन छत्रपति छाजे रे,
राणी वामा गृहिणी सुराजे... व्हालाजीनुं. २
चैत्र वदी चौथे प्रभु चविया रे, माता वामा कुखे अवतरिया रे,
अजुवाल्यां एहना परीयां... व्हालाजीनुं. ३
पोष वदी दशमी जग भाण रे, होवे प्रभुजीनुं जन्मकल्याणक रे,
वीश स्थानक सुकृत कमाण... व्हालाजीनुं. ४
नारकी नरके सुख पावे रे, अन्तर्मुहूर्त्त दुःख जावे रे,
ए तो जन्मकल्याणक कहेवाय... व्हालाजीनुं. ५
प्रभु त्रण भुवन शिरताज रे, तुमे तारण तरण जहाज रे,
कहे 'दीपविजय' कविराय... व्हालाजीनुं. ६

२. (राग. मनमोहन सुंदर मेला...)

नित्य समरुं साहिब सयणां, नाम सुणतां शीतल श्रवणां,

जिन दरिसणे विकसे नयणां, गुण गातां उल्लसे वयणां रे,
शंखेश्वर साहेब साचो, बीजानो आसरो काचो रे. शंखेश्वर. १
द्रव्यथी देव दानव पूजे, गुण शान्त रुचिपणुं लीजे,
अरिहा पद पर्यव छाजे, मुद्रा पद्मासन राजे रे. शंखेश्वर. २
संवेगे तजी घरवासो, प्रभु पार्श्वना गणधर थाशो,
तव मुक्तिपुरीमां जाशो, गुणीलोकमां वयणे गवाशो रे. शंखेश्वर. ३
एम दामोदर जिनवाणी, आषाढी श्रावके जाणी,
जिन वंदीने निज घर आवे, प्रभु पार्श्वनी प्रतिमा भरावे रे.शंखेश्वर. ४
त्रण काल ते धूप उवेखे, उपकारी श्री जिन सेवे,
पछी तेह वैमानिक थावे, ते प्रतिमा पण तिहां लावे रे. शंखेश्वर. ५
घणा काल पूजी बहुमाने, वली सूरज चन्द्र विमाने,
नागलोकनां कष्ट निवार्या, ज्यारे पार्श्व प्रभुजी पधार्या रे शंखेश्वर. ६
यदु सैन्य रह्युं रण घेरी, जीत्या नवि जाये वैरी,
जरासंघे जरा तव मेली, हरिबल विना सघले फेरी रे. शंखेश्वर. ७
नेमीश्वर चोकी विशाली, अट्ठम तप करे वनमाली रे,
तूठी पद्मावती बाली, आपे प्रतिमा झाकझमाली रे. शंखेश्वर. ८
प्रभु पार्श्वनी प्रतिमा पूजी, बलवंत जरा तव धूजी,
छटकांव न्हवण जल जोती, जादवनी जरा जाय रोती रे.शंखेश्वर. ९
शंख पुरी सौने जगावे, शंखेश्वर गाम वसावे,
मन्दिरमां प्रभु पधरावे, शंखेश्वर नाम धरावे रे. शंखेश्वर. १०
रहे जे जिनराज हजूरे, सेवक मनवांछित पूरे रे,
प्रभुजीने भेटण काजे, शेठ मोतीभाईना राजे रे. शंखेश्वर. ११
नाना माणेक फेरा नंद, संघवी प्रेमचंद वीरचंद,
राजनगरथी संघ चलावे, गामे गामना संघ मिलावे रे. शंखेश्वर. १२
अढार इट्ठोतेर वरसे, फागण वदि तेरस दिवसे,
जिन वंदी आनंद पावे, शुभ वीर वचन रस गावे रे. शंखेश्वर. १३

३. शास्त्रीय-शीवरंजनी, भैरवी, मालकोष

(राग. दिकरी तो पारकी थापण कहेवाय...)

अब मोहे ऐसी आय बनी. अब मोहे.
श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर, मेरे तुं एक धनी. अब. १
तुम बिन कोई चित्त न सुहावे, आवे कोडि गुनी,
मेरो मन तुम उपर रसियो, अलि जिम कमल भणी. अब. २
तुम नामे सवि संकट चूरे, नागराज धरणी,
नाम जपुं निशि वासर तेरो, ए मुज शुभ करनी. अब. ३
कोपानल उपजावत दुर्जन, मथन वचन अरणी,
नाम जपुं जलधार तिहां तुज, धारुं दुःख हरणी. अब. ४
मिथ्यामति बहुजन हैं जग में, पद न धरत धरणी,
उनसे अब तुम भक्ति प्रभावे, भय नहि एक कनी. अब. ५
सज्जन नयन सुधारस अंजन, दुर्जन रवि भरणी,
तुज मूरति निरखे सो पावे, सुख 'जस' लील धणी. अब. ६

(राग. हे ये पावनभूमी... यहां बार... मेरा जीवन कोरा कागज...)

राधा जेवा फूलडा ने शामल जेवो रंग,
आज तारी आंगी नो कांई रूडो बन्यो छे रंग,
प्यारा पासजी हो लाल, दीनदयाल मुजने नयणे निहाल प्यारा. १
जोगीवाडे जागतो ने मातो धिंगडमल्ल,
शामलो सोहामणो कांई, जीत्या आठे मल्ल. प्यारा. २
तूं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास,
आशा पूरो दासनी कांई सांभली अरदास. प्यारा. ३
देव सघलां दीठा तेमां, एक तूं अवल्ल,
लाखेणुं छे लटकुं ताहरुं देखी रीझे दिल्ल प्यारा. ४
कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम,
उदयरत्न कहे प्रभुजी, मारे तुमसुं काम. प्यारा. ५

५

(राग. आज मारा प्रभुजी सामुं जुओने...)

प्यारो प्यारो रे, हो व्हाला मारा पास जिणंद मने प्यारो,
तारो तारो रे, हो व्हाला मारा भवनां दुःखडा वारो...
काशीदेश वाराणसी नगरी, अश्वसेन कुल सोहिये रे,
पार्श्व जिणंदा वामानंदा मारा व्हाला, देखत जनमन मोहिये.प्यारो प्यारो. १
छप्पन दिक्कुमरी मली आवे, प्रभुजी ने हुलरावे रे,
थेई थेई नाच करे मारा व्हाला, हरखे जिन गुण गावेप्यारो प्यारो. २
कमठ हठ गाल्यो प्रभु पार्श्वे, बलतो उगार्यो फणी नाग रे,
दीयो सार नवकार नागकुं, धरणेन्द्र पद पायो रे प्यारो प्यारो. ३
दीक्षा लई प्रभु केवल पायो, समवसरणे सुहायो रे,
दीये मधुरी देशना प्रभुजी, चौमुख धर्म सुणायो रे, प्यारो प्यारो. ४
कर्म खपावी शिवपुर जावे, अजरामर पद पावे रे,
'ज्ञान' अमृत रस फरसे मारा व्हाला, ज्योति से ज्योति मिलावे रेप्यारो प्यारो. ५

६

(राग. सागर किनारे दिल ये पुकारे, स्वामि ! तुम्हे काई कामण...)

तुं प्रभु माहरो हुं प्रभु ताहरो, क्षण एक मुज ने नाही विसारो,
महेर करी मुज विनंती स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहालोतुं प्रभु. १
लाख चौरासी भटकी प्रभुजी, आव्यो हुं तारे शरणे हो जिनजी,
दुर्गति कापो ने शिव सुख आपो, स्वामी सेवक जाणी निहालोतुं प्रभु. २
अक्षय खजानो प्रभु ताहरो भर्यो छे, आपो कृपालु में हाथ धर्यो छे,
वामानंदन जगवंदन प्यारो, देव अनेरा मां तुंही ज न्यारो तुं प्रभु. ३
पल पल समरूं नाथ शंखेश्वर, समरथ तारक तुंही जिनेश्वर,
प्राण थकी तुं अधिको वहालो, दया करी मुजने नेहे निहालोतुं प्रभु. ४
भक्त वत्सल तारुं बिरूद जाणी, केड न छोडुं प्रभु लेजो जाणी,
चरणो नी सेवा हुं नित्य नित्य चाहुं, घडी घडी मनमां ए उमाहुं तुं प्रभु ५
'ज्ञानविमल' तुंज भक्ति प्रभावे, भवोभव ना संताप शमावे,
अमीय भरेली तारी मूरती निहाली, पाप अंतर ना लेजो पखालीतुं प्रभु ६

७

(राग. हैले चढ्या रे हैया हेले (गरबा)

तारा नयनां रे प्याला प्रेमना भर्या छे, दया रसना भर्या छे, अमीछांटना भर्या छे,
जे कोई ताहरी नजरे चढी आवे, कारज तेहनां ते सफल कर्या छेतारा. १
प्रगट थई पातालथी प्रभु ते, जादवना दुःख दूर कर्या छे तारा. २
पन्नगपति पावकथी उगार्यो, जनम मरण भय तेहना हर्या छे तारा. ३
पतित पावन शरणागत वत्सल, दर्शन दीठे मारा चित्तडां ठर्या छेतारा. ४
श्री शंखेश्वर पार्श्वजिनेसर, तुज पद पंकज आजथी धर्या छे तारा. ५
जे कोई तुजने ध्याने ध्यावे, अमृत सुख तेणे रंगथी वर्या छे तारा. ६

८

(राग. रघुपती राघव राजा राम, फूल तुम्हे भेजा है खत में...)

समय समय सो वार संभारुं, तुजशुं लगनी जोर रे,
मोहन मुजरो मानी लेजो, ज्युं जलधर प्रीति मोर रे समय. १
माहरे तन धन जीवन तुंही, एहमां जूठ न जाणो रे,
अंतरजामी जगजन नेता, तुं किहां नथी छानो रे समय. २
जेणे तुजने हियडे नवि धार्यो, तास जनम कुण लेखे रे,
काचे राचे ते नर मूरख, रतनने दूर उवेखे रे समय. ३
वामानंदन पास प्रभुजी, अरजी चित्तमां आणो रे,
'रूप विबुध'नो मोहन पभणे, निज सेवक करी जाणो रे समय. ४

९

(राग. मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं... राम राखे तिम रहिये ओधवजी...)

अखियाँ हरखण लागी हमारी, अखियां हरखण लागी,
दरिसण देखत पास जिणंद को, भाग्य दशा अब जागी हमारी. १
अकल अरूपी और अविनाशी, जग जनने करे रागी हमारी. २
शरणागत प्रभु ! तुज पद पंकज, सेवना मुज मन जागी हमारी. ३
लीलालहेर दे निज पदवी, तुम सम को नहीं त्यागी. हमारी. ४
वामानंदन चंदन नी परे, शीलत तुं सोभागी हमारी. ५
'ज्ञानविमल' प्रभु ध्यान धरंता, भव भय भावठ भागी. हमारी. ६

१०

(राग. यशोमति मैया से पुछे नंद लाला, टिलडी रे, मारा प्रभुजीने शोभती)

कोयल टहुंक रही मधुवन में, पार्श्व शामलीया वसो मेरे दिल में,
काशीदेश वाराणसी नगरी, जन्म लियो प्रभु क्षत्रियकुल में पार्श्व. १
बालपणा मां प्रभु अद्‌भूत ज्ञानी, कमठ को मान हर्यो एक पल मेंपार्श्व. २
नाग निकाला काष्ठ चिराकर, नागकुं सुरपति कीयो एक छीन मेंपार्श्व. ३
संयम लई प्रभु विचरवां लाग्या, संयमे भींज गयो एक रंग मेंपार्श्व. ४
समेतशिखर प्रभु मोक्षे सिधाव्या, पार्श्वजी को महिमा तीन भुवन मेंपार्श्व. ५
'उदयरतन' की एही अरज है, दिल अटक्यो तोरा चरण कमले मेंपार्श्व. ६

११

(राग. शास्त्रीय-मालकोष राग)

जय जय जय पास जिणंदा, वामानंदन पास जिणंदा
अंतरिक्ष प्रभु त्रिभुवन तारक, भविक कमल उल्लास दिणंदा जय. १
तेरे चरण शरण में कीनो, तुम बिन कोण तोडे भवफंदा,
परम पुरूष परमारथदर्शी, तुं दीये भविक कुं परमानंदा जय. २
तुं नायक तुं शिवसुखदायक, तुं हितचिंतक तुं सुखकंदा,
तुं जनरंजन तुं भवभंजन, तुं केवल कमला गोविंदा जय. ३
कोडि देव मिलके न करसके, एक अंगुष्ठ रुप प्रतिष्ठा,
ऐसो अद्‌भूत रूप तिहारो, वरसत मानुं अमृत के बुंदा जय. ४
मेरे मन मधुकर के मोहन, तुम हो विमल सदल अरविंदा,
नयन चकोर विलास करत है, देखत तुम मुख पूनमचंदा जय. ५
दूर जावे प्रभु ! तुम दरिशन से, दुःख दोहग दारिद्र अघदंदा,
वाचक 'जस' कहे सहस फलत है, जे बोले तुम गुण के वृंदा. जय. ६

१२

(राग. हो मैया ! मोरी मैं नहीं माखण खायो...)

सुखदाई रे सुखदाई रे, हो दादो पासजी सुखदाई सुखदाई.
ऐसो साहिब नहि कोउ जगमें, सेवा कीजे दिल लाई. हो दादो. १
सब सुखदायक ऐहिज नायक, ऐहि सायक सुसहाई,
किंकरंकुं करे शंकर सरीखो, आपे अपनी ठकुराई हो दादो. २
मंगल रंग वधे प्रभु ध्याने, पापवेली जाए करमाई,
शीतलता प्रगटे घट अंतर, मीटे मोह की गरमाई हो दादो. ३
कहाँ करुं सुरतरु चिंतामणिकुं, जो में प्रभु सेवा पाई,
श्री 'जसविजय' कहे दर्शन देख्यो, घर आंगन नव निधि आईहो दादो. ४

१३

(राग. अब सोंप दिया इस जीवन को...)

श्री चिन्तामणि प्रभु पासजी, दादा वात सुणो एक मोरी रे,
मारा मनना मनोरथ पूरजो, हुं तो भक्ति न छोडुं तोरी रे. १
मारी खिजमतमां खामी नहि, ताहरे खोट न कांई खजाने रे,
हवे देवानी शी ढील छे, कहेवुं ते कहीऐ थाने रे. २
तमे उरण सवि पृथ्वी करी, धन वरसी वरसीदाने रे,
मारी वेला शुं एहवा, दीयो वांछित वालो वानो रे. ३
हुं तो केड न छोडुं ताहरी रे, आप्या विण शिवसुख स्वामी रे,
मूरख ते ओछे मानशे, चिन्तामणि करतल पामी रे. ४
मत कहेशो तुज कर्मे नथी, कर्मे छे तो तुं पाम्यो रे,
मुज सरिखा कीधा मोटका, कहो तेणे कांई तुज थाम्यो रे. ५
काल स्वभाव भवितव्यता, ए सघला तारा दासो रे,
मुख्य हेतु तुं मोक्षनो, ए मुजने सबल विश्वासो रे. ६
अमे भक्ते मुक्तिने खेंचशुं, जिम लोहने चमक पाषाणो रे,
तुमे हेजे हसीने देखशो, कहेशो सेवक छे सपराणो रे. ७
भक्ति आराध्या फल दिए, चिन्तामणि पण पाषाणो रे,
वली अधिकुं कांई कहावशो, ए भद्रक भक्ति ते जाणो रे. ८
बालक ते जिम तिम बोलतो, करे लाड तातने आगे रे,

ते तेहशुं वांछित पूखे, बनी आवे सघलुं रागे रे. ९
माहरे बननारुं ते बन्युं ज छे, हुं तो लोकने वात शीखावुं रे,
वाचक 'जस' कहे साहिबा, ऐ रीते तुम गुण गावुं रे १०

१४

(राग. देखी श्री पार्श्वतणी मूर्ति अलबेलडी)

पार्श्व जिणंदा माता वामाजी के नंदा, तुम पर वारी जाउं खोल खोल रे...
हारें दरवाजे तेरे खोल रे, हम दर्शन को आये दौड दौड रे...१
पूजा करूंगा मै तो धूप धरूंगां, फूल चढाउं बहु मोल मोल रे...२
तूं मेरा ठाकर मैं तेरा चाकर, एक वार मोशुं बोल बोल रे...३
शंखेश्वर मंडन सुंदर मूरत, मुखडुं ते झाकम झोल झोल रे...४
रूप विधुनो मोहन पभणे, रंग लाग्यो चित्त चोल चोल रे...५

१५

(राग. ए मेरे धरम के राही...)

मेरे साहिब तुमही हो, प्रभु पास जिणंदा,
खिजमतगार गरीब हूं, मैं तेरा बंदा. मेरे. १
मैं चकोर करुं चाकरी, जब तुमही चंदा,
चक्रवाक मैं हुई रहूं, जब तुमही दिणंदा. मेरे. २
मधुकर परे मैं रणझणुं, जब तुम अरविंदा,
भक्ति करूं खगपति परे, जब तु गोविंदा. मेरे. ३
तुम जब गर्जित घन भये, तब मैं शिखिनंदा,
तुम जब सायर मैं तदा, सुरसरिता अमंदा. मेरे. ४
दूर करो दादा पासजी, भव-दुख का फंदा,
वाचक जस कहे दासकुं, दियो परमानंदा. मेरे. ५

१६

(राग. ऐ मेरे प्यारे वतन, दिल दिया है जान भी देंगे..)

वामानंदन वंदना प्रभु, चरणोमां अवधारो रे,
करूणा करी करूणानिधि, मने भवसागरथी तारो रे. करुणा. १
एक समय संसारमां, प्रभु आपणे साथे रमीया रे,
तुमे निर्मोही थई गया, अमे भव अटवीमां भमीया रे, करुणा. २
दुःखडा नरक निगोदना, कहेतां न आवे पार रे,
छेदन भेदन बहु सह्यां, वली परमाधामीना मार रे, करुणा. ३
अवर नहि कोई विश्वमां, प्रभु तुम विन तारणहार रे,
एम सुणीने हुं आवीयो, स्वामी तुम दरबार रे, करुणा. ४
परिणति तीव्र कषायनी, भटकावे लाख चोराशी रे,
नाना जन्म धरावीने, नांखे गलामां फांसी रे, करुणा. ५
प्रीत पुरातन दाखवो, निज गुण आपो नाथ रे,
हुं भव कादवमां खूंच्यो, उगारो झाली हाथ रे, करुणा. ६
धन दौलत मांगु नहि, प्रभु छे मुज ए अरदास रे,
त्रिभुवन तारक बोलावजो रे, 'रूप' विजय तुम पास रे करुणा. ७

१७

(राग. है ज्ञान की ये गंगा...)

ॐ नमो पार्श्व पद पंकजे, विश्व चिंतामणि रत्न रे,
ॐ ह्रीँ धरणेन्द्र पद्मावती, वैरोट्या करो मुज यत्न रे. १
अब मोहे शांति तुष्टि महा, पुष्टि धृति कीर्ति विधायिरे।
ॐ ह्रीं अक्षर मंत्रथी, आधि व्याधि सवि जाय रे. २
ॐ असिआउसाय नमो नमः, तुं त्रैलोक्यनो नाथ रे,
चोसठ इंद्रो टोले मली, सेवे जोडी प्रभु हाथ रे. ३
ॐ ह्रीं श्री प्रभु पार्श्वजी, मूलनाम मंत्रनुं बीज रे,
पार्श्वथी सर्व दूरति टले, आवी मिले सवि चीज रे. ४
ॐ अजिता विजया तथा, अपरा विजया जया देवी रे,
दश दिशीपाल ग्रही यक्ष जो, विद्या देवी प्रसन्न होय सेवी रे. ५
गोडी प्रभु पार्श्व चिंतामणि, थंभणो अहिछत्रो देव रे,
जगवल्लभ जगे जागतो, अंतरीक्ष वरकाणो करुं सेव रे ६
श्री शंखेश्वर पूर मंडणो, पार्श्व जिन प्रणत तरु कल्प रे,
वारजो दुष्टना वृंदने, 'सुजस' सौभाग्य सुख कल्प रे ७

१८

(राग. हे यें पावन भूमि...)

श्री शंखेश्वर प्रभु पास, मारी विनंती मानो खास,
करो मुज हैया मां वास, मने दरिसण द्यो एक वार. श्री शंखेश्वर. १
तारी मूर्ति मोहनगारी, सहु कोईना हिल हरनारी,
तारो महिमा अपरंपार, मने दरिसण... श्री शंखेश्वर. २
तारी सुरतरु जेवी छाया, छे पुनित तारी काया,
मने ना गमे बीजानी माया, मने दरिसण.श्री शंखेश्वर. ३
हुं रागी तुं छे निरागी, तारा दरिसणनी लगनी लागी,
मारा भवनी भावठ भांगी, मन दरिसण. श्री शंखेश्वर. ४
प्रभु एक वात मारी मानो, तारी पासे छे गुणनो खजानो,
मने आपो तो नहि खुटवानो, मने दरिसण. श्री शंखेश्वर. ५
तारी आंगी अनुपम चमके, कांई जगमग जगमग झलके,
निरखीने हैयुं हरखे, मने दरिसण. श्री शंखेश्वर. ६
तुं मारो अंतरयामी, भवोभव मुज होजो स्वामी,
तने प्रणमुं छुं शिरनामी, मने दरिसण. श्री शंखेश्वर. ७
दूर दूरथी यात्रिको आवे, भक्ति भावे गुण तारा गावे,
सम्यग् दर्शन पद पावे, मने दरिसण. श्री शंखेश्वर. ८
तारा दरिसननी बलिहारी, अमने लियो भवथी उगारी,
कहे 'पद्मविजय' सुखकारी, मने दरिसण. श्री शंखेश्वर. ९

१९

(राग. वीर जिणंद जगत उपकारी.)

वामानंदन जगदानंदन, जेह सुधारस खाणी,
मुखने मटके लोचन लटके, लोभाणी इंद्राणी. मोहन. १

मोहन मुजरो लेजो नाथ, तुम सेवामां रहिशुं, तुम भक्ति अमे करशुं...
भव पट्टण चिहुं दिशि चारे गति, चोराशी लाख चउटा,
क्रोध, मान, माया, लोभादिक, चोवटिया अति खोटा, मोहन. २
मिथ्या महेतो कुमति पुरोहित, मदनसेनाने तोरे,
लांच लई लख लोक संतापे, मोह कंदर्पने जोरे, मोहन. ३
अनादि निगोद ते बंदीखाने, तृष्णा तोपे राख्यो,
संज्ञा चारे चोकी मेली, वेद नपुंसक आंक्यो. मोहन. ४
भवस्थिति कर्म विवर लई नाठो, पुण्य उदय पण वाध्यो,
स्थावर विकलेन्द्रियपणुं ओलंगी, पंचेन्द्रियपणुं लाध्यो. मोहन. ५
मानवभव आरजकुल सद्गुरू, विमलबोध मल्यो मुजने,
क्रोधादिक सहु शत्रु विनाशी, तेणे ओलखाव्यो तुजने. मोहन. ६
पाटणमांहे परम दयालु, जगत विभुषण भेट्या,
सत्तर बाणुं शुभ परिणामे, कर्म कठिन बल मेट्या. मोहन. ७
समकित गज उपशम अंबाडी, ज्ञान कटक बल कीधुं,
खिमाविजय जिन चरण रमण सुख, राज पोतानुं लीधुं. मोहन. ८

२०

(राग. एक घडी प्रभु उर एकांते...)

श्री शंखेश्वर पार्श्वप्रभुना नामे हुं जाऊं बलिहार,
नाम जपंता दिहां गमुं रे, भवभय भंजनहार रे...मिले मन भीतर भगवान. १
नाम सुणंता मन उल्लसे रे, लोयण विकसित होय,
रोमांचित हुए देहडी रे, जाणे मिलियो सोय रे, मिले. २
पंचम काले पामवो रे, दुल्लहो प्रभु देदार,
तो पण तारा नामनो रे, छे मोटो आधार रे, मिले. ३
नाम ग्रहे आवी मिले रे, मन भीतर भगवान,
मंत्र बले जिम देवता रे, वालहो कीधो आह्वान रे, मिले. ४
ध्यान पदस्थ प्रभावथी रे, चाख्यो अनुभव स्वाद,
मान विजय वाचक कहे रे, मूको बीजो वाद रे, मिले. ५

२१

(राग. मेरे नैना सावन भादो (शिवरंजनी)

मेरे मन आई बसो भगवान, भगवान शंखेश्वरा,
मैं निर्गुणी इतना ही मांगत, थाये मेरा कल्याण. मेरे. १
मेरे मन की तुम सब जानो, क्या कहुं आपसे ब्यान,
विश्व हितैषी दीन दयालु, रखीये मुज पर ध्यान. मेरे. २
भोगाधीन होवत मन मेलुं, बिसरी तुम गुण गान,
वहां से छोडावो हृदये आई, अरिभंजक भगवान, मेरे. ३
आप कृपा से तर गये केई, रह गया मैं दर्दवान,
निगाह रखके निर्मल कीजिये, धनवंतरी भगवान, मेरे. ४
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, दीजिये तुम गुण गान,
इनही सहारे 'चिद्धन' देवा, बनुंगा आप समान, मेरे. ५

२२

(राग. मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं, तुं प्रभु मारो, हुं प्रभु तारो.)

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो,
सांभळीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो,
सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव-सुख आपो,
आपो आपोने महाराज, अमने मोक्ष सुख आपो. १
सुह कोनां मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो रे,
एवुं बिरुद छे राज तमारुं, केम राखो छो दूरे. सेवक० २
सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो रे,
करुणा सागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो. सेवक० ३
लटपटनुं हवे काम नहि छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे रे,
धुमाडे धीजुं नहिं साहिब, पेटे पड्या पतीजे. सेवक० ४
श्री शंखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो रे,
कहे 'जिनहर्ष' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो. सेवक० ५

२३

(राग. मैं तुलसी तेरे आंगन की..)

ये अखियाँ दरिशन की है प्यासी ये अखियाँ. प्यास बुझावो मेरे अखियण की.
पुरिषादानी पार्श्व तुमारी, सुरनर जनता दासी,
आशा पूरण तुं अवनितल, सुरतरूने संकासी अखियाँ. १
निरागी शुं राग करंता, होवत जगमां हांसी,
एक पखो जे नेह चलावे, दीओ तेहने शाबाशी. अखियाँ. २
अजर अमर अकलंक अनंतगुण, आप भये अविनाशी,
कारज सकल करी सुख पायो, अब क्युं होय ऊदासी. अखियाँ. ३
तुं पुरूषोत्तम परम पुरूष है, तुं जगमें जितकासी,
जगथी दूर रह्यो पण मुज चित्त, अंतर क्युं कर जासी? अखियाँ. ४
वामानंनद वंदन तुमचा, करत है शुभ मति वासी,
ज्ञानविमल प्रभु चरण पसाये, समकित लील विलासी. अखियाँ. ५

२४

(राग. श्री ऋषभनुं जन्म कल्याणक रे)

अहो! अहो! पासजी! मुज मळीया रे, मारा मनना मनोरथ फळीया. अहो०
तारी मूरति मोहनगारी रे, सहु संघने लागे छे प्यारी रे,
तमने मोही रह्यां सुर नर नारी. अहो० १
अलबेली मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखडा उपर जाउं वारी रे,
नागिणीनी जोड उगारी. अहो. २
धन्य धन्य देवाधिदेवा रे, सुरलोक करे तारी सेवा रे,
अमने आपो ने शिवपुर मेवा. अहो० ३
तमे शिवरमणीना रसिया रे, जई मुक्तिपुरीमां वसीया रे,
मारा हृदयकमलमां वसिया. अहो० ४
जे कोई पार्श्वतणा गुण गाशे रे, भवोभवनां पातक जाशे रे,
तेना समकित निर्मल थाशे. अहो० ५
प्रभु त्रेवीशमां जिनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे,
अमने दरिशण द्योने दयाला. अहो० ६
हुं तो लळी लळी लागुं छुं पाय रे, मारा उरमां ते हरख न माय रे,

एम 'माणेकविजय' गुण गाय. अहो० ७

२५

(राग. कोण भरे (३) शत्रुंजय नदीनुं नीर कोण भरे रे.)

भेटीए भेटीए भेटीए रे, मनमोहन जिनवर भेटीए,
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, पूजी पातक मेटीए, मन० १
जादवनी जरा जास न्हवणथी, नाठी एक चपेटीए. मन० २
आश धरीने हुं पण आव्यो, निज करे पीठ थपेटीए. मन० ३
त्रण रतन आपो ज्युं राख्या, निज आतमनी पेटीए..मन ० ४
साहिब सुरतरू सरीखो पामी, और कुण आगे लेटीए...मन० ५
पद्मविजय कहे तुमरे चरणथी, क्षण एक न रहुं छेटीए. मन० ६

२६

(राग. जय गणेश... देवा...)

तार मुज तार मुज, तार त्रिभुवन धणी, पार उतार संसार स्वामी,
प्राण तुं त्राण तुं शरण आधार तुं, आतमराम मुज तुंही स्वामी.तार० १
तुंही चिंतामणि, तुं हि मुज सुरतरुं, कामघट कामधेनु विधाता,
सकल संपत्ति करुं, विकट संकट हरुं, पास शंखेश्वरो मुक्ति दातातार० २
पुण्य भरपूर अंकुर मुज जागीओ, भाग्य-सौभाग्य मुख नूर वाध्यो,
सकल वांछित फल्यो, माहरो दिन वल्यो पार्श्व शंखेश्वरो देव लाध्यो. तार० ३
मूर्ति मनोहारिणी, भवजलधि तारिणी निरखत नयन आनंद हुओ,
पार्श्व प्रभु भेटिया, पातिक मेटीया, लेटिया ताहरे चरणे जुओतार० ४
पास तुं मुज धणी, प्रीति मुज बनी घणी, विबुधवर नयविजय गुरु वखाणी,
मुक्तिपद आपजो आप पद थापजो, जसविजय आपनो भक्त जाणी.तारा० ५

२७

(राग. चांदि की दिवार न तोडी, परदेशीयो से न अखीयां मिलाना...)

मनमोहन प्रभु पासजी, सुणो जगत आधारजी,
शरणे आव्यो प्रभु ताहरे, मुज दुरित निवारजी. १
विषय कषायना पाशमां, भम्यो काल अनंतजी,
राग द्वेष महा चोरटा, लुट्यो धर्मनो पंथजी. २
पण कोई पूरव पूण्यथी, मलीया श्री जिनराजजी,
भव समुद्रमां डूबता, आलंबन जिम जहाजजी. ३
कमठे निज अज्ञानथी, उपसर्ग कीधा बहुं जातजी,
ध्यानानल प्रगटावीने, कीधो कर्मनो घातजी. ४
केवलज्ञानथी देखीयुं, लोकालोक स्वरूपथी,
विजय मुक्तिपद जई वर्या, सादी अनंत चिद्रूपजी. ५
ते पद पामवा चाहतो, मोहन कमलनो दासजी,
मन मोहन प्रभु माहरी, पूरजो मननी आसजी. ६

२८

(राग. हे त्रिशलाना जाया...)

ओलगडी अवधारो, आश धरी हुं आव्यो,
श्री शंखेश्वर अलवेसर तारी, आश धरी हुं आव्यो,

सेवक पार करोने साहिब ! चिंतामणी में पायो...ओलगडी. १
देव घणां मे सेव्यां पहेलां, जिहां लगे तुं नवि मलीयो,
हवे भवांतरमां पण तेहथी, कीम हि न जाउं छलीयो...ओलगडी. २
अतिशय ज्ञानादिक जिन तारा, दिसे छे प्रभु जेहवां,
सुरज आगल ग्रहगण दीपे, हरिहर दीपे तेहवा...ओलगडी. ३
कलिकाले प्रगट तुज परचो, देखुं विश्व मोझार,
पुरुषादाणी पार्श्व जिनेश्वर, बाह्य ग्रहीने तारो...ओलगडी. ४
पुष्करावर्त घनाघन पामी, ओर छिल्लर नवि याचुं,
कामकुंभ साचो पामीने, चित्त करे कोण काचुं ?..ओलगडी. ५
जरी निवारी जादव केरी, सुर नरवर सहुं पूज्यां,
पासजी प्रत्यक्ष देखत दरिसन, पाप मेवासी ध्रुज्यां...ओलगडी. ६
सो वाते एक वातडी जाणो, भवजल पार उतारो,
पंडित उत्तम विजयनो सेवक, 'रत्नविजय' जयकारो...ओलगडी. ७

२९

(राग. प्यारा पार्श्वजी हो लाल... दिनदयाल...)

नवखंडाजी हो पास मनडुं लोभावी बेठा आप उदास,
तारे तो अनेक छे ने, मारे तो तुं एक,
कामी क्रोधी देव जोई, काढी नाखी टेक नव० १
कोई देवी देवताना, झाली उभा हाथ, मोढे मांडी मोरलीने,
नाचे राधा नाच नव० २
जटा जुट शिर धारे, वली चोले राख, गले तो गिरजाने राखे,
जोगीपणुं खाख नव० ३
पीर ने फकीर जोया, निरगुणी देव, काच तृण मणी गणी,
आ तो खोटी टेव नव० ४
देव देखी जूठडाने, आव्यो छुं हजूर, गुण आपो आपना तो,
'कांति' भरपूर नव० ५

३०

(राग. तार मुजतार मुज तार त्रिभुवन धणी)

सार कर सार कर स्वामी शंखेश्वरा, विश्व विख्यात एकांत आवो,
जगतना नाथ मुज हाथ झाली करी, आज किम काजमा वार लावो ? १
हृदय मुज रंजणो शत्रु दुःख भंजणो, इष्ट परमिष्ट मोहे तुंहि साचो,
खलक खिजमत करे विपत्ति समे खिण भरे, नवि रहे तास अभिलाष काचो. २
यादवा रणजणे राम केशव रणे, जाम लागी जरा निंद सोती,
स्वामी शंखेश्वरा चरण जल पामीने, यादवानी जरा जाय रोती. ३
आज जिनराज उंघे किस्युं आ समे, जाग महाराज सेवक पनोता,
सुबुद्धि मले टले धूते दोलत हरे, वीर हाके रिपुवृंद रोता. ४
दास छुं जन्मनो पुरीये कामना,ध्यानथी मास दश दोय वीत्या,
विकट संकट हरो निकट नयणां करो, तो अमे शत्रु नृपतिकुं जीत्या. ५
काल मुखे अशन शीतकाले वसन, श्रम सुखासन रणे उदक दाई,
सुगुण नर सांभरे विसरे नहि कदा, पासजी तुं सदा छे सखाई. ६
मात तुं तात तुं भ्रात तुं देव तुं, देव दुनियामां दूजो न वहालो,

श्री शुभवीर जग जीत डंको करे, नाथजी नेक नयणे निहालो. ७

३१

(राग. शास्त्रीय महाकोष राग.)

हे प्रभु पार्श्व चिंतामणी मेरो, मिल गयो हीरो, मिट गयो फेरो,
नाम जपुं नित्य तेरो. हे प्रभु पार्श्व. १
प्रीत बनी अब प्रभुजी शुं प्यारी, जैसे चंद चकोरो. हे प्रभु पार्श्व. २
आनंदघन प्रभु ! चरण शरण है, दीयो मोहे मुक्ति को डेरोहे प्रभु पार्श्व. ३

३२

(राग. देशी...)

जिनजी त्रेवीशमो जिन पास के आश मुज पूरवे रे लो, महारा नाथजी रे लो०
जिनजी इहभव परभव दुःख, दोहग सवि चूरवे रे लो, मा०
जि० आठ प्रातिहार्यशुं, जगमां तुं जयो रे लो, मा०
जि० ताहरा वृक्ष अशोकथी, शोक दूर गयो रे लो. मा० १
जि० जानु प्रमाण गीर्वाण कुसुम वृष्टि करे रे लो, मा०
जि० दिव्यध्वनि सुर पूरे के, वांसलीये स्वरे रे लो. मा०
जि० चामर केरी हार चलंती, एम कहे रे लो, मा०
जि० जे नमे अम परे ते भवि, उर्ध्वगति लहे रे लो, मा० २
जि० पादपीठ सिंहासन, व्यंतर विरचीये रे लो, मा०
जि० तिहां बेसी जिनराज, भविक देशना दीये रे लो, मा०
जि० भामंडल शिर पूंठे, सूर्य परे तपे रे लो, मा०
जि० निरखी हरखे जेह, तेहना पातक खपे रे लो, मा० ३
जि० देवदुंदुभिनो नाद, गंभीर गाजे घणो रे लो, मा०
जि० त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवन पति पणो रे लो, मा०
जि० ए ठकुराई तुजके, बीजे नवि घटे रे लो, मा०
जि० रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो. मा० ४
जि० पूजक निंदक दोय के, ताहरे समपणे रे लो०, मा०
जि० कमठ धरणपति उपर, समचित्त तुं गणे रे लो, मा०
जि० पण उत्तम तुज पाद पद्म सेवा करे रे लो, मा०
जि० तेह स्वभावे भव्य के, भवसायर तरे रे लो. मा० ५

३३

(राग. मेरे अंगनो में तुम्हारा क्या काम है...)

मेरे हो चिंतामणि प्रभु, पासजी का काम है...
जलधि किनारे भारा, नयर गंधार सारा,
चिंतामणि पार्श्वप्रभु का, उहां बडा धाम है.१
मूरति प्रभु की मीठी, ऐसी छबी नांहि दीठी,
शान्तसुधारस केरां, मानुं एक ठाम है. २
दूषम कालमें स्वामी, दुःखी है नाहि खामि,
आनंद समाधि दीजे, मुजे बडी हाम है. ३
अखूट खजाना तेरा, थोडा बहुत कर दो मेरा,
सुख जनकुं देना वे तो, प्रभु तेरा काम है. ४

बीरूद संभालीजे, मेरा तेरा नाहि कीजे,
'तरण तारण'ऐसा, प्रभु तेरा नाम है. ५
वीर कहे शिरनामी, सुणो हो गंधार स्वामी
देना हो तो ज्ञान दे दो, दुजा नाहि काम है. ६
निधि रस निधीन्दु वरसे, पोष मासे शीत पक्षे,
चतुर्दशी दिन भेटे, ए ही अभिराम है. ७

३४

(राग. सुनो चंदाजी ! सीमंधर परमातम पासे जाओ...)

हे अविनाशी! नाथ निरंजन... साहिब मारो. साहिब साचो,
हे शिववासी! तत्त्व प्रकाशी... साहिब मारो. साहिब मारो. १
भवसमुद्र रह्यो महाभारी, केम करी तरवुं हे
अविकारी, बाह्य ग्रहीने करो भवपारी. २
वामानंदन नयने निरख्या, आनंदना पूर हैये उमट्या,
कामितपूरण कल्पतरुं फलिया. ३
महिमा तारो छे जग भारी, पार्श्व शंखेश्वरा
तूं जयकारी, सेवकने द्यो केम विसारी. ४
मारे तो प्रभु तूंहि एक देवा, न गमे करवी बीजानी सेवा,
अरज सुणो प्रभु देवाधिदेवा. ५
सात राज अलगा जई बेठा, पण भगते अम मनमांही पेढा,
'वाचकयश' कहे नयणे में दीठा...साहिब मारो. साहिब साचो. ६

३५

(राग. अजवाला देखाडो, अंतर द्वारा उघाडो...)

जिन तेरे चरण की शरण ग्रहुं...
हृदयकमल मे ध्यान धरत हुं, शिर तुज आण वहुं. जिन० १
तुज सम खोल्यो देव खलक में, पेख्यो नहीं कबहुं. जिन० २
तेरे गुण की जपुं जपमाला, अहनिश पाप दहुं. जिन० ३
मेरे मन की तुम सब जानो, क्यां मुख बहोत कहुं. जिन० ४
कहे 'जसविजय' करो त्युं साहिब, ज्युं भवदुःख न लहुं. जिन० ५

३६

(राग. याद आवे मोरी मां...)

भवजल पार उतार (२) श्री शंखेश्वर
शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, मारो तुं एक आधार...भवजल. १
काल अनंतो भमता भमता, क्यांय न आव्यो आरो, धन्य घडी
ते मारी आजे, दीठो तुम देदारो, दीठो तुम देदार (२)...श्री शंखे. २
तुं वीतरागी, तु अविनाशी, तुं नीराबंधी देव. हुं रागी
छुं पापी जीवडो, भक्तो भव अपार, भमतो भव अपार (२) श्री शंखे. ३
आ दुनियामां तारा जेवो, कोई न तारणहार, वामानंदन
चंदननी परे शीतल जेनी छाया, कोई न तारणहार (२) श्री शंखे. ४
भलोभव तुम चरण सेवा, मांगु छुं दीनदयाला, रंगविजय
कहे प्रेमशुं रे, विनंति ए अवधार, विनंति ए अवधार (२) श्री शंखे. ५

३७

(राग. साबरमती के संत तुने कर दिया कमाल... श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम..)

शंखेश्वर दरबारमां गावुं मधुरा राग, वामादेवीना नंद तुमे सुणजो रे वीतराग,
जय जय जय जय पारसनाथ. १
पोतनपुरी पहले भवे समकितने लीधा, मरूभुतिं नामे तमे सत्कार्यने किधा,
खमावता निज भाईने मृत्यु शिरे लीधा समता धरी आपे अहो पामे न कोई ताग. २
बीजे भवे हस्ती बनी जिनधर्मने पाम्या, सर्पे दीधो विषडंखने तोये तमे खम्या,
मृत्यु थई स्वर्गे गया दिल धर्ममां जाम्या, धन्य हे जगनाथ समाधि छे तारी साथ. ३
विद्याधर चोथे भवे वैराग्यने पाम्या, राज्य त्यजी रळियामणुं संसारनी माया,
अणगार थई विचरे सदा जिन ध्यानने ध्याया, झेरी डस्यो भुजंग तोये प्रेमनो निनाद. ४
बारमे स्वर्गे गया भव पांचमे उजमाळ, त्यांथी च्यवी छट्ठे भवे विदेहमां अवतार,
कुमार वज्रनाभ नामे संयम स्वीकार, भीले कर्यो तीरघात मुनि धीर बडभाग. ५
ग्रैवेयके सुर देवता भव सातमे सुजाण, त्यांथी च्यवी विदेहमां चक्री बन्या कल्याण,
सुवर्णबाहु नामे गुणरत्ननी छे खान, दीक्षा ग्रही जिनराज पासे धन्य है नरनाथ. ६
निकाचता जिननामने अणगार महाधीर, वनराज समरी वैरने मारे मुनिवर वीर,
नवमे भवे स्वर्गे गया खील्युं महा खमीर, वैरभाव त्यजी पाम्या तमे शीवपुरनी पाग. ७
जंबुद्विपे गंगातीरे वाराणसी आव्या, स्वर्गथी चवी दशमे भवे पार्श्व कहाया,
अश्वसेन राजन कुले जयनाद कराया, वैभवलयी संसारनो किधो प्रभुए त्याग. ८
संसार कारावासनी सहु बैडियो तोडी, वैराग्यनी हाकळ करी मोह हांडियो फोडी,
सिद्धि वधुनी साथे शुभ प्रीतने जोडी, तोड़्या अंते मोड़्या सहु संसारना विखवाद. ९
मोक्षे गया जिन आप मुकि जीवोने अनाथ, विकराळ आ संसारमां रुडो गयो संगाथ,
माणेक मुनि कहे मने तारजो जगनाथ, निवारजो संसारमां रखडेलनो सहु थाक. १० जय
जय जय जय पारसनाथ.

३८

(राग. वैष्णव जन तो तेने रे कहिये...)

शंखेश्वर मंडण पार्श्वजिणंदा, अरज सुणो टालो दुःखदंदा,
तुं साहिब हुं छुं तुज बंदा, प्रीत बनी जैसी कैरव चंदा. १
तुज शुं नेह नहि मुजकायो, घणहि न भांजे न हिये जाचो,
देतां दान कंइ विमासो, लाग्यो मुज मन एक तमासो. २
केडे लाग्यो जे प्रभु केड न छोडे, दीयो वांछित सेवक कर जोडे,
अक्षय खजाने प्रभु तुज नवि खूटे, हाथ थकी तो शुं नवि छूटे. ३
जो खीजमतमां खामी दाखो, तो पण निज जाणी हित राखो,
जेने दीधुं छे प्रभु तेहिज देशे, सेवा करशे ते फल लेशे. ४
धेनु कूप आराम स्वभावे, देतां देतां प्रभु संपत्ति पावे,
तिम मुजने प्रभु जो गुण देशो, तो जगमां जश अधिको वहेशो. ५
अधिकुं ओछुं प्रभु किश्युं कहावो, जिम तिम सेवक चित्त मनावो,
मांग्या विना तो माय न पीरसे, एह उखाणो साचो दिसे. ६
एम जाणीने विनंती कीजे, मोहनगारा मुजरो लीजे,
वाचक यश कहे खमीय आसंगो, दीयो शिवसुख अविहड रंगो. ७

(राग. मारवाडी)

पासजी तोरा पाय पलक में, छोड़्या रे नवि जाय,
पलक मैं (२) साहिबा. तमुसे लगन लगी १
लगी लगी आंखीयाने रही रे लोभाय. दुनियामां धुर्जे कोई आवे न दाय. तुमसे २
आछी आछी अंगीयाने रंग अनुप, अजब बन्युं छे साहिब. आजनुं रूप...तुमसे ३
शिर काने कर हैये सोहे उदार, मुगुट कुंडल बाजु बंध ने हार. तुमसे ४
तुज पद पंकज मुज मन भंग, चित्तमां लाग्यो रे साहिबा. चोलनो रंग तुमसे ५
देवाधिदेव तुं तो दीन दयाल, त्रिभुवन. नायक तुजने नमु त्रण काळ तुमतो ६
लंबी लंबी बाउडीने बेड बेड नेण, सुरतरू सरखो साहिबा शिवा सुख देण साहिबा. ७
जुणी जुणी मुरतीने ज्योत अपार. सुरत देखीने प्रभुजी मोह्यो संसार. तुमसे ८ सत्तरसे एंशी समेने चैतर मास, पूरण मासे पहोती पूरण आश. तुमसे ९ 'उदयरत्न' वाचक वंदे एम पार्श्वशंखेश्वर जोता वाध्यो छे प्रेम...तुमसे १०

४०

(राग- मेरा जीवन कोरा कागझ)

सकल समता सुरलतानो, तुंहि अनुपम कंद रे,
तुंही कृपारस कनक कुंभो, तुंहि जिणंद मुणींद रे. प्रभु० १
प्रभु तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि, युंहि धरता ध्यान रे,
तुज स्वरूपी जे थया तेणे, लह्युं ताहरुं तान रे. प्रभु० २
तुंहि अलगो भव थकी पण, भवित ताहरे नाम रे,
पार भवनो तेह पामे, ऐहि अचरिज ठाम रे. प्रभु० ३
जन्म पावन आज मारो, निरखीयो तुज नूर रे,
भवोभव अनुमोदना जे, हुओ आप हजूर रे. प्रभु० ४
एक माहरो अखाय आतम, असंख्यात प्रदेश रे,
ताहरा गुण छे अनंता, किम करूं तास निवेश रे. प्रभु० ५
एक एक प्रदेश ताहरे गुण अनंतनो वास रे,
एम करी तुज सहज मिलत, हुओ ज्ञान प्रकाश रे प्रभु० ६
ध्यान ध्याता ध्येय एकी, भाव होये एम रे,
एम करतां सेव्य सेवक, भाव होये क्षेम रे. प्रभु० ७
शुद्ध सेवा ताहरी जो, होय अचल स्वभाव रे,
ज्ञानविमल सूरींद प्रभुता, होय सुजस जमाव रे. प्रभु० ८

४१

(राग- तमे तो अमारा रे पारसनाथजी)

अबोलडां शानां लीधां छे राज,जीव जीवन प्रभु माहरा. जीव.
तमे अमारा अमे तमारा, वास निगोदमां रहेतां. अबोलडां. १
काल अनंत स्नेही प्यारा, कदीय न अंतर करतां,
बादर स्थावरमां बेहुं आपण, काल असंख्य निगमतां. अबो० २
विकलेन्द्रियमां काल संख्याता, विसर्या नवि विसरतां,
नरक स्थाने रह्या बेउं साथे, तिहां पण बहु दुःख सहतां. अबो० ३
परमाधामी सनमुख आपण, टग टग नजरे जोतां,
देवना भवमां एक विमाने, देवना सुख अनुभवतां. अबो० ४

एकण पासे देवशय्यामां, थेई थेई नाटक सुणतां,
तिहां पण तमे अने अमे बेउ साथे, जिन जन्म महोत्सव करतां.अबो० ५
तिर्यंच गतिमां सुखदुःख अनुभवतां, तिहां पण संगे चलतां,
एक दिन समवसरणमां आपण, जिनगुण अमृत पीतां. अबो० ६
एक दिन तमे अने अमे बेउ साथे, वेलडीए वलगीने फरतां,
एक दिन बालपणामां आपण, गेडी दहे नित्य रमतां. अबो० ७
तमे अने अमे बेउं सिद्ध स्वरूपी, एवी कथा नित्य करतां,
एक कुल एक गोत्र एक ठेकाणे, एक ज थालीमां जमतां. अबो० ८
एकदिन हुं ठाकोर तमे चाकर, सेवा माहरी करतां,
आज तो आप थया जग ठाकोर, सिद्धि वधूना पनोतां. अबो० ९
काल अनंतनो स्नेह विसारी, काम कीधां मनगमतां,
हवे अंतर केम कीधुं प्रभुजी, चौद राज जई पहोंतां. अबो० १०
दीपविजय कवि राज प्रभुजी, जगतारण जगनेतां,
निज सेवकने यशपद दीजे, अनंत गुणी गुणवंतां अबो० ११

४२

(राग- मालकोष, शिवरंजनी)

आनंद की घडी आई, सखीरी आज आनंदकी घडी आई,
करके कृपा प्रभु दरिशन दिनो, भवकी पीड मीटाई,
मोह निद्रासे जाग्रत करके, सत्य की बात सुणाई,
तनमन हर्ष न माई...सखीरी १
नित्यानित्यका भेद बताकर, मिथ्यादृष्टि हराई,
सम्यग्ज्ञानकी दिव्य प्रभाको अंतरमें प्रगटाई,
साध्य साधन दिखलाई... सखीरी २
त्याग वैराग्य संयम के योग से, निःस्पृह भाव जगाई,
सर्वसंग परित्याग कराकर, अलख धून मचाई,
अपगत दुःख कहलाई... सखीरी ३
अपूर्वकरण गुणस्थानक सुखकर, श्रेणी क्षपक मंडवाई,
वेद तीनोंका छेद कराकर, क्षीण मोही बनवाई,
जीवन मुक्ति दिलाई...सखीरी ४
भक्त वत्सल प्रभु करूणा सागर, चरण शरण सुखदाई,
'जश' कहे ध्यान प्रभु का ध्यावत, अजर अमर पद पाई,
द्वंद सकल मिट जाई...सखीरी ५

स्तुति सरिता

१. शंखेश्वर पासजी पूजिए

शंखेश्वर पासजी पूजिए, नरभवनो लाहो लीजिए,
मनवांछित पूरन सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरूं. १
दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुणनीला,
दोय नीला दोय शामल कह्यां, सालि जिन कंचन वर्ण लह्यां. २
आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हियडे राखियो,
तेहनो रस जेणे चाखियो, ते हुओ शिवसुख साखियो. ३

धरणेन्द्रराय ापद्मावती, प्रभुपार्श्वतणां गुण गावती,
सहु संघना संकट चूरती, नयविमल ना वांछित पूरती. ४

२

पास जिणंदा वामानंदा, जब गरभे फली,
सुपनां देखे अर्थविशेषे कहे मघवा मली,
जिनवर जाया, सुर हुलराया हुआ रमणी प्रिये,
नेमिराजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीए. १
वीर एकाकी चार हजारे दीक्षा धूरे जिन पति,
पासने मल्ली त्रयशत साथे बीजा सहसी व्रती,
षटशत साथे संजमधरता वासुपूज्य जग धणी,
अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी. २
जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरुवेलडी,
द्राक्ष विहासे गई वनवासे पीले रस शेलडी,
सागर सेंती तरणां लेती मुखे पशु चावती,
अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुर वधू गावती. ३
गजमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली,
चारते बांही कच्छपवाही, काया जश शामली,
चउकर प्रौढ़ा नागारूढा देवी पद्मावती,
सोवन कांति प्रभु गुण गाती वीर घरे आवती. ४

३. भीलडीपुरमंडण

भीलडीपुर मंडण, सोहिए पार्श्वजिणंद, तेहने तमे पूजो, नर-नारीनां वृंद !,
ते त्रुट्यो आपे, धण-कण कंचन क्रोड, ते शिवपद पामें, कर्मतणा भय छोड. १
घनघसीय घनाघन, केसरना रंगरोल, तेहमां तमे भेलो, कस्तुरीना घोल,
तिणशुं तमे पूजो, चउवीशे जिणंद, जेम दैव दुःख जावे, आवे घर आणंद. २
त्रिगडे जिन बेठा, सोहिये सुंदर रूप, तस वाणी सुणवां, आवी प्रणमे भूप,
वाणी जोजननी, सुणजो भवियण सार, ते सुणतां होशे पातिकनो परिहार. ३
पाय रुमझुम रुमझुम, झांझरना झणकार, पद्मावती खेले, पार्श्व तणे दरबार,
संघ विघ्न हरजो, करजो जयजयकार, एम सौभाग्यविजय कहे, सुख संपत्ति दातार. ४

४

सकल सुरासुर सेवे पाया, नयरी वाराणसी नाम सोहाया, अश्वसेन कुल आया,
दश ने चार सुपन दिखलाया, वामादेवी माताए जाया, लंछन नाग सोहाया,
छप्पन दिग्कुमरी हुलराया, चोसठ ईन्द्रासन डोलाया, मेरुशिखर नवराया,
नीलवरण तनु सोहे काया, श्रीविजयसेनसूरीश्वरराया, पार्श्व जिनेश्वर गाया. १
विद्रुमवरणा दोय जिणंदा, दो नीला दो उज्जवल चंदा, दो काला सुखकंदा,
सोले जिनवर सोवनवरणा, शिवपुरवासी श्रीपरसन्ना, जे पूजे ते धन्ना,
महाविदेहे जिन विचरंता वीसे पूरा श्रीभगवंता, त्रिभुवन ते अरिहंता,
तीरथ स्थानक नामुं ए शीश, भाव धरीने विश्वावीश, श्री विजयसिंह सूरीश. २
सांभल सघला अंग अग्यार, मन शुद्धे उपांग ज बार, दश पयन्ना सार,
छेद ग्रंथ वली षट विचार, मूलसूत्र बोल्या जिन चार, नंदी अनुयोगद्वार,
पणयालीश जिन आगम नाम, श्री जिन अरथे भाख्या जाम, गणधर गुंथे ताम,

श्री विजयसेनसूरींद वखाणे, जे भविका जिन चित्तमां जाणे, तस घर लक्ष्मी आणे. ३
विजापुरमां स्थानक जाणी, महिमा म्होटे तुं मंडाणी, धरणेन्द्र धणियाणी,
अहनिश सेवेसुर वैमानी परतो पूरण तुं सपराणी, पूरव पुण्य कमाणी,
संघ चतुर्विध विघ्न निवारो, पार्श्वनाथनी सेवा सारो, सेवक पार उतारो,
श्री विजयसेनसूरीश्वरराया, श्री विजयदेवगुरु प्रणमी पाया, ऋषभदास गुण गाया. ४

५. श्री युक्तचिन्तामणिपार्श्वनाथ

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म ! श्रीयुक्तचिन्तामणिपार्श्वनाथ !
दुर्वारसंसारभयाच्च रक्ष, मोक्षस्य मार्गे वरसार्थवाह ! ।।१।।
जिनेश्वराणां निकर ! क्षमायां, नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म !
कुरुष्व निर्वाणसुखं क्षमाभृत् ! सत्केवलज्ञानरमां दधान ! ।।२।।
कैवल्यवामाहृदयैकहार ! क्षमासरस्वद्रजनीशतुल्य !
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान ! तनोतु ते वाग् जिनराज !सौख्यम् ।।३।।
श्री पार्श्वनाथ क्रमणाम्बुजाथ, सारंगतुल्य कल धौतकान्ते,
श्री यक्षराज गरुडाभिधान, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ।।४।।

६. श्रीमत्पार्श्वदेवंवन्दे

श्रीमत्पार्श्वदेवं वन्दे ।।१।। श्रेयोदो मेऽर्हन्तः सन्तु ।।२।।
जैन वाणी सौख्यं दद्यात् ।।३।। पद्मादेवी शंमे कुर्यात् ।।४।।

७. श्री शंखेश्वर पार्श्वप्रभु

श्री शंखेश्वर पार्श्वप्रभु समरुं, अरिहंत अनंत नुं ध्यान धरुं;
जिन-आगम अमृतपान करो, शासनदेवी सवि विघ्न हरुं...
(यह स्तुति चार बार बोली जा सकती है।)

६ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ वंदनावली ६

जेना स्मरणथी जीवनना संकट बधा दूर टले,
जेना स्मरणथी मनतणां वांछित सहु आवी मले,
जेना स्मरणथी आधि व्याधि ने उपाधि न टके,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं ।।१।।
विघ्नो तणा वादल भले, चोमेर घेराई जतां,
आपत्तिना कंटक भले, चोमेर वेराई जतां,
विश्वास छे जस नामथी ए दूर फेंकाई जतां. एवा. ।।२।।
त्रण कालमां त्रण भुवनमां, विख्यात महिमा जेहनो,
अद्भुत छे देदार जेहना, दर्शनीय आ देहनो,
लाखों करोडो सूर्य पण जस आगले झांखा पडे एवा. ।।३।।
धरणेन्द्र पद्मावती जेनी सदा सेवा करे,
भक्तो तणा वांछित सघला, भक्तिथी पूरा करे,
इन्द्रो नरेन्द्रो ने मुनीन्द्रो, जाप करतां जेहनो एवा. ।।४।।
जेना प्रभावे जगतना, जीवो बधा सुख पामतां,
जेना न्हवणथी जादवोना, रोग दूरे भागतां
जेना चरणना स्पर्शने, निशदिन भक्तो झंखतां एवा. ।।५।।
बे काने कुंडल जेहना, माथे मुगट बिराजतो,
आंखो महि करुणा अने, निज हैये हार विराजतो,
दर्शन प्रभुनुं पामी मननो, मोरलो मुज नाचतो एवा. ।।६।।

ॐ ह्रीं पदोने जोडीने, शंखेश्वराने जे जपे,
धरणेन्द्र पद्मावती सहित, शंखेश्वराने जे जपे,
जन्मो जनमना पापने, सहु अन्तरायो जस तुटे एवा. ।।७।।
कलिकालमां हाजराहजूर, देवो तणाये देव जे,
भक्तो तणी भव भावठोने, भांगनारा देव जे,
'मुक्तिकिरण' नी ज्योतने, प्रगटावनारा देव जे एवा. ।।८।।
प्रगटप्रभावी नाम तारुं नाथ साचुं होय जो,
कलिकालमां मुजने प्रभुजी, मुक्ति सुख देखाड तो,
तुज नाम सत्य ठरे ज छे, मुज आतम आनंद तो,
'प्रगटप्रभावी' प्रभु पार्श्वने भावे करुं हुँ वंदना एवा. ।।९।।
जे प्रभुना दर्शनथी सहु आपदा दूरे थती,
ने जे प्रभुना स्पर्शथी, लहु सम्पदाओ मली जती,
विघ्नो हरी शिवमार्गना, जे मुक्ति सुखने आपता,
'विघ्नहरा' पार्श्वनाथने भावे करुं हूँ वन्दना एवा. ।।१०।।
जेना गुणोने वर्णवा, श्रुतसागरो ओछा पडे,
गंभीरताने मापवा सहु, सागरो पाछा पडे,
जेनी धवलता आगले, क्षीरसागरो छांखा पडे,
'शंखेश्वरा' प्रभु पार्श्वने भावे करुं हुँ वन्दना एवा. ।।११।।
जेना वदननुं तेज निरखी, सूर्य आकाशे भमे,
वली नेत्रना शुभ पीयूष पामी, चन्द्र निशाएँ झगे,
जेनी कृपादृष्टि थकी आ, वादलाओ वरसता एवा. ।।१२।।
अतीत चोवीशी तणा, नवमां दामोदर प्रभु,
अषाढी श्रावक पूछता, को माहरा तारक प्रभु,
त्यां जाणता प्रभु पार्श्वने, प्रतिमा भरावीने पूजतां एवा. ।।१३।।
सौधर्म कल्पादि विमाने, पूज्यता जेनी रही,
वली सूर्य चन्द्र विमानमां, पूजा थई जेनी सही,
ने नागलोके नाथ बनीने, शान्ति सुखने अर्पता एवा. ।।१४।।
आ लोकमां आ कालमां, पूजाय आदिकालथी,
वली नमी विनमी विद्याधरो, जेने सेवे बहुमानथी,
त्यांथी धरणपति लई प्रभुने, निजभवन पधरावता एवा. ।।१५।।
जरासंघनी विद्या जरा, ज्यां जादवोने घेरती,
नेमिप्रभु उपदेशथी श्री कृष्ण अट्ठमने तपी,
पद्मावती बहुमानथी, प्रभु पार्श्वप्रतिमा आपती एवा. ।।१६।।
जेना न्हवणथी जादवोनी, जरा दूरे भागती,
शंखध्वनि करी स्थापना त्यां, पार्श्वनी प्रतिमा खरी,
जेना प्रभावे नृपगणोना, रोग सहु दूरे थतां एवा. ।।१७।।
जेना स्मरणथी भाविकना, इच्छित कार्यो सिद्धता,
जेना नामथी पण विषधरोना, विष अमृत बनी जतां,
जेना पूजनथी पापियोना, पाप ताप शमी जतां एवा. ।।१८।।
ज्यां कामधेनु कामघटने, सुरतरु पाछा पडे,
चिंतामणि पारसमणिना, तेज ज्यां झांखा पडे,

मणि मंत्र तंत्रने यंत्र जेना, नामथी फल आपतां एवा. ।।१९।।
संसारगर्तमां पडेला, जीवोना रक्षणहार जे,
संसारसागरमां खूंचेला, जीवोना तारणहार जे,
शंखेशपुर माणेक समा, जे नाथ जगना शोभतां,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना, चरणोमां प्रेमे नमुं,
मारा प्रभु पार्श्वनाथने, भावे करुं हुँ वंदना एवा. ।।२०।।

नवीन गीतों के सूर

१. हे शंखेश्वर स्वामी...

हे शंखेश्वर स्वामी, प्रभु जग अन्तरयामी,
तमने वंदन करीए २ शिव सुखना स्वामी हे शंखेश्वर...१
मारो निश्चय एक ज स्वामी, बनुं तमारो दास,
तारा नामे चाले २ मारा श्वासोश्वास हे शंखेश्वर...२
दुःख संकटने कापो स्वामी वांछितने आपो,
पाप हमारा हरजो २ शिव सुखने देजो हे शंखेश्वर...३
राद दिवस झंखुं छुं स्वामी ! तमने मलवाने,
करुणाना छो सागर स्वामी, कृपा तणा भंडार,
त्रिभुवनना छो नायक २ जगना तारणहार हे शंखेश्वर...४

२. तुमसे लागी लगन...

तुमसे लागी लगन ले लो अपनी शरण पारस प्यारा,
मेटो मेटोजी संकट हमारा. १
निश दिन तुजको जपुं, परसे नेहा तजुं, जीवन सारा, मेरो. २
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवीके सुत प्राण प्यारे,
परसे नेहा तोडा, जग से मोह तोडा संयम धारा, मेरो. ३
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये,
आशा पुरो सदा, दुःख नहीं आवे कदा सेवक तारा, मेरो. ४
लाखो बार तुझे शीश नमावुं, जग के नाथ तुजे कैसा पावुं,
पंकज व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जीया लागे खारा, मेरो. ५

३. कृपा करो कृपा करो रे...

कृपा करो कृपा करो कृपा करो रे, पार्श्वनाथ दादा मोपे, कृपा करो रे;
तारी कृपाए मारा काज सरो रे...पार्श्वनाथ दादा..१
शंखेश्वर तीर्थना सांई सोहामणा, देवाधिदेव करो दिलमां पधरामणा;
अंतर पधारी मारुं श्रेय करो रे...पार्श्वनाथ दादा..२
भवनी गलीनो हुँ तो भूंडो भिखारी, रुडा हे नाथ ! तारी करुं आज यारी,
शिवपुरना वासी मने याद करो रे..पार्श्वनाथ दादा..३
तारे ने मारे नाथ अंतर झाझेरुं, आवो अंतर तो मारा पापो विखेरुं,
पापो विखेरी दिल आवी मलो रे...पार्श्वनाथ दादा..४
तारो विरह मारा दिलडाने डंखतो, तेथी तमारुं दर्श दिलथी हुं झंखतो,
मोंघेरी झंखवाना पूर्ण करो रे...पार्श्वनाथ दादा..५
मंथन स्वरूप तारी यात्राना भावथी, टलसे वियोग तारो तारा सद्भावथी,
मलवा एकांते मन आवी मलो रे...पार्श्वनाथ दादा..६

प्रेमे सकल संघ साथ तने वदतो, गुणरत्नसूरि तारो भक्त आनंदतो,
सकल संघ तणी पीड हरो रे... पार्श्वनाथ दादा..७

४. यह है पावनभूमि...

यह है पावन भूमि, यहाँ बारा-बार आना,
पार्श्वनाथ के चरणों मे, आकर के झूक जाना...यह है पावन १
तेरे मस्तके मुकुट हैं, तेरे कानों मे कुंडल है;
तूं तो करुणा सागर है, मुझ पर करुणा करना...यह है पावन २
तेरा तीरथ सुंदर है, हमें प्राणों से प्यारा है;
मेरी विनति सुन लेना, बेटा पार लगा देना...यह है पावन. ३
तूं जीवनस्वामी है, तूं अंतर्यामी है;
मेरी नैया डूब रही, नैया को तिरा लेना...यह है पावन ४
तेरी साँवली सूरत है, मेरे मन को लुभाती है,
प्रभु मेरी भक्ति को, स्वीकार तूं कर लेना...यह है पावन ५

५. क्यारे बनीश हुं साचो रे संत...

क्यारे बनीश हुं साचो रे संत, क्यारे थशे मारा भवनो रे अंत...
लाख चौराशीना चौरेने चौटे, भटकी रह्यो छुं मारग खोटे,
क्यारे मलशे मुजने, मुक्तिनो पंथ क्यारे थशे मारा भवनो रे अंत १
काल अनादिनी, भूलो छूटे ना घणुंये मथुं तोए,स पापो खूटे ना,
क्यारे तूटशे ए, पापोनो तंत पंथ क्यारे थशे मारा भवनो रे अंत २
छः काय जीवोनी हुं, हिंसा रे करतो, पापो अढारे, जरी ना विसरतो,
मोह मायानो हुं तो रटतो रे मंत्र पंथ क्यारे थशे मारा भवनो रे अंत. ३
पतित पावन, प्रभुजी उगारो, रत्नत्रयी नो हुं, याचक तारो,
भक्त बनी, मारे थावुं महंतपंथ क्यारे थशे मारा भवनो रे अंत. ४

६. सोनामां सुगंध भले...

एक घडी प्रभु उर एकांते आवीने स्नेहे मले, सोनामां सुगंध भले, १
खोयुं होय जीवनमां जे जे, पाछुं आवी मले;
ज्यां ज्यां हार थई जीवनमां, त्यां त्यां जीत मले...सोनामां २
ना कांई लेवुं ना कांई देवुं, चिंता एनी टले;
ना होय जन्म, ना होय मरण, फेरा जो भवना टले...सोनामां ३
कर्मो कीधा होय जे जीवनमां, सघलां साथे बले;
करूणासागर पार्श्व प्रभुनो, साचो संबंध मले... सोनामां ४
विनंती करुं छुं प्रभु हुं तमने, जीवननी छेल्ली पले;
मुझ मनडानी वीणाना तारोमां, झंकार तारो मले...सोनामां ५

७. मारा व्हाला प्रभु...

मारा व्हाला प्रभु, क्यारे मलशो तमे, मारा आशापुरी, क्यारे करशो तमे मारा.
करुणासागर बिरुद छे तमारुं प्रभु, करुणा करशो ए आश धरुं हुं प्रभु,
रात दिवस हुं समरुं छुं प्रभु तुजने मारी. १
मारी कबुलात छे के पतित हतो हुं, पण पतितों ने तारनारो एक ज छे तुं,
पतित पावन बनी क्यारे आवशो तमे. मारी. २
तुजने निरखी शकुं, एवी दृष्टि तुं दे, तुजने ओलखी शकुं एवी शक्ति तुं दे
तारी छायानी मायामां रहेवुं गमे मारी. ३

८. बधी मिल्कत तने धरुं...

बधी मिल्कत तने धरुं तो पण, तारी करुणानी तोले ना आवे,
ते मने प्यार जे कर्यो भगवंत, माराथी एनुं मूल ना थाये १
जिंदगीभर तने भजुं तो पण, तारी ममताने तोले ना आवे
ते मने प्रमे जे दीधो भगवंत, माराथी एनुं मूल ना थाये २
अनादि कालथी भटकवामां, कोई स्थाने मिलन थयुं तारुं,
या तो उपदेश मे सुण्यो तारो, जेने बदली दीधुं जीवन मारुं;
भोमीया तो घणा मल्यां मुझने, कोई प्रभु तारी तोले ना आवे,
ते मने रहा जे बताव्यो छे, माराथी एनुं मूल ना थाये ३
मने साची सलाह तें दीधी, एथी आचरण में कर्युं एनुं,
साची करणी करी कोई भवमां, आ भवे फल मने मल्युं एनुं;
मारा उपकारी छे घणा जगमां, कोई प्रभु तारी तोले ना आवे,
ते मने धर्म जे पमाड्यो छे, माराथी एनुं मूल ना थाये ४
मल्यां छे जे सुखो मने आजे, ए बधा धर्मना प्रभावे छे,
तारा चरणे बधुं धरी देतां, मने आनंद अति आवे छे;
तारुं आ ऋण क्यारे चुकवाशे, मने अंदाज एनो ना आवे,
भवोभव सेवना करूं तारी, तोए संतोष मुजने ना थाये ५

९. मारुं आयखुं खूटे जे घडीए...

मारुं आयखुं खूटे जे घडीए; त्यारे मारा हृदयमां पधारजो;
छे अरजी तमोने दादा एटली; मारा मृत्युने स्वामी सुधारजो छे अरजी....१
जीवननो ना कोई भरोसो; दोडा दोडीना आ युगमां;
अंतरियाले जईने पडुं जो, ओचिंता मृत्युना मुखमां;
त्यारे मारा स्वजन बनी आवजो; थोडा शब्दो धर्मना सुणावजो छे अरजी....२
दर्दो वध्या छे आ दुनियामां, मारे रिबावी रिबावीने;
एवी बिमारी जो मुझने सतावे, छेल्ली पलोमां रडावीने;
त्यारे मारी मददमां पधारजो, पीडा सहेवानी शक्ति वधारजोछे अरजी...३
जीववुं थोडुं नें जंजाल झाझी, एवी स्थिति आ संसारनी;
छूटवा दे ना मरती वेलाए, चिंता मने जो परिवारनी;
त्यारे दीवो तमे प्रगाटावजो, मारा मोह तिमिरने हटावजोछे अरजी...४

१०. दूरदूरथी तारा दरबारे आव्यो...

दूरदूरथी तारा दरबारे आव्यो, पार्श्वनाथ दादा तारा दरबारे आव्यो,
दर्शन करवाने हुं तो शंखेश्वर आव्यो,
दर्शन देजो दादा रे २...दादा रे दादा रे दादा रे...दूरदूरथी... १
तुं छे समर्थ दादा एवुं मे जाण्युं, हुं छुं अज्ञानी कांई वधु ना हुं जाणुं,
आव्यो हुं तारे द्वारे, हैयमां धरी हाम, वलशे मुजने निरांत, हेव थावुं ना निराश,
एवा एवा मनसुबा घडी हुं तो आव्यो,
पूरजो पूरजो दादा रे २...दादा रे दादा रे दादा रे...दूरदूरथी... २
जन्मो जनमथी दादा मुजने तुं जाणे,
प्रीत तारी मारी दाद लोको शुं जाणे, कहेवुं शुं जगने आज, तारी मारी आ छे वात,
साचवजे मुजने नाथ, विनंती छे मारी आज, अंतरनी प्रार्थना तुं जाणे अजाणे,
सुणजो सुणणो दादा रे २...दादा रे दादा रे दादा रे...दूरदूरथी... ३

करने कसोटी हवे बंद मारा दादा, कर्मोना लेख हवे बदल मारा दादा
सहेवानी शक्ति खूटी, जीवननी आशा तूटी, लोक जाय लाज लूटी, हवे मारी धरीज खूटी,
रडतो रझळतो हुं तारे द्वार आव्यो,
गुणरत्नसूरि दादा तारे द्वारे आव्या, तारजो तारजो दादा रे... ४
आवजो आवजो दादारे...पूरजो पूरजो दादा रे...
मलजो मलजो दादा रे... दादा रे दादा रे...दूरदूरथी...

११. आँखडी मारी हरखाय...

आँखंडी मारी प्रभु ! हरखाय छे, ज्यां तमारा मुखना दर्शन थाय छे...आंखडी मारी...
पग अधीरा दोडता देरासरे, द्वारे पहोचुं त्यां अजंपो थाय छे...ज्यां १
देवनुं विमान जाणे उतर्युं एवुं मंदिर आपनुं सोहाय छे...ज्यां २
चांदनी जेवी प्रतिमा आपनी तेज एनुं चोतरफ फेलाय छे...ज्यां ३
मुखडुं जाणे पुनमनो चंद्रमां दिलमां तो ठंडक अनेरी थाय छे...ज्यां४
बस तमारा रूप ने निरख्या करुं, लागणी एवी हृदयमां थाय छे...ज्यां ५

१२. तारे द्वारे आवीने कोई...

तारे द्वारे आवीने कोई, खाली हाथे जाय ना, करुणानिधान...कृपानिधान
आ दुनियामां कोई नथी रे, तुझ सरीखो दातार, अपरंपार दया छे तारी, तारा हाथ हजार,
तारी ज्योति पामीने कोई, अंधारे अटवायना...करुणानिधान...कृपानिधान...१
शरणे आवेलानो साचो, तुं छे तारणहार,
डगमगती जीवन नैयानो, तुं छे रक्षणहार,
तारा पंथे जनारो कदीये, भवरणमां अटवाय ना...करुणानिधान...कृपानिधान...२
खूटे नहि कदापि एवो, तारो प्रेम खजानो,
मुक्तिनो मारग बतलावे, एवो पंथ मजानो,
तारे शरणे जे कोई आवे, रंक पणे रही जायना...करुणानिधान...कृपानिधान...३

१३. कोटी कोटी वार कसोटी...

कोटी कोटी वार मारी करी ले कसोटी, करी ले कसोटी मारी करी ले कसोटी कोटी. १
चाहे भड-भडती भीषण आगमां तु नांखजे, चाहे दरियानां उंडा जलमां डुबाडजे,
लाखा लाख रीते मुझने लेजे तुं लसोटी कोटी. २
करवा होय तारे जे, ते करी लेने पारखा, मारे तो सुख दुःख बन्ने एकज सारखा,
जोई ले तुं विपद केरा वायरा विंझोटी कोटी. ३
मारी श्रद्धाने तुं तो जोई ले कसीने, दुःखना पत्थर पर एने जोई ले घसीने,
कदी नहीं उतरे एनी रत्तीभर खोटी कोटी. ४
दुःखना दावनलमां तुं भले मने नांखजे सुखना स्वर्गोमां तुं भले मने राखजे,
गमे ते रीते मने जोई ले भीजोटी कोटी. ५

१४. तमे मन मूकीने वरस्यां...

तमे मन मूकीने वरस्यां, अमे जनम जनम ना तरस्यां,
तमे मूशल धारे वरस्यां, अमे जनम जनम ना तरस्यां...
हजार हाथे तमे दीधुं पण, झोली अमारी खाली;
ज्ञान खजानो तमे लूटाव्यो, तोय अमे अज्ञानी;
तमे अमृतरूपे वरस्या, अमे झेर ना घुंटडा फरस्या... तमे...
स्नेहनी गंगा तमे वहावी, जीवन निर्मल करवा;

प्रेमनी ज्योति तमे जगावी, आतम उज्जवल करवा;
तमे सूरज थई ने चमक्यां, अमे अंधारा मां भटक्यां...तमे...
शब्दे शब्दे शाता आपे, एवी तमारी वाणी;
ए वाणीनी पावनताने, अमे कदी ना पिछानी;
तमे महेरामण थई उमट्यां, अमे कांठे आवी अटक्यां...तमे...

१५. कहुं शंखेश्वर पार्श्वजीनी वारता...

कहुं छुं शंखेश्वर पार्श्वजीनी वारता, एतो शरणे आवेलाने तारता...ए तो.
एनी मूर्ति छे मोहनगारी, भवोभवना ते दुःख हरनारी
जेना दर्शने, देवताओ आवतां...ए तो. कहुं छुं. १
व्हालो पातालमांथी पधारता, दुःखियां कुलना दुःख निवारतां
रूडा शंखेश्वर गामे बिराजता...ए तो. कहुं छुं. २
दूर देशोथी यात्रालु आवतां, एनी भक्तिनी धून मचावतां
एना दरवाजे नोबत वागता...ए तो. कहुं छुं. ३
एना मुखडा उपर जाऊंवारी, नाग बलताने लीधो उगारी
मारा शमणामां पार्श्वप्रभु आवतां, ए तो शरणे आवेलाने तारतां. कहुं छुं. ४

१६. मने व्हालुं लागे पारस ना...

मने व्हालुं लागे पारस नाम, तन-मन-धन प्रभुना चरणोमां मने व्हालुं लागे...
प्रभुजीना गुणोनो पार नहीं आवे, ध्यान धरुं त्यां सन्मुख आवे,
दीनजनोना नाथ छो, सेवकना रखवाळ छो तमे मारा चित्तडाना चोर, तन० मने० १
प्रभुजी अमारा हृदयामां रहेजो आप आवीने मारो हाथ पकडजो
तमारो आधार छे, एक ज तारणहार छे भक्तोनी लेजो रे संभाल,तन० मने० २
भवसागरथी व्हाला अपने उगारजो डुबती बेली ने व्हाला पार उतारजो (२)
तमे छो भक्तोना बेली, एवी अमने हैया हेली सेवकनी लेजो रे संभाल,तन० मने० ३

१७. तारी ज्योति ने में जोई...

तारी ज्योति ने में जोई ज्यारे ज्यारे, मारे कोठे कोठे दीवा प्रगट्यां त्यारे,
प्रभु तारा वदननी बलिहारी बलिहारी तारी ज्योति. १
तारी धाराने में झीली ज्यारे ज्यारे,
मारे रोमे रोमे फूल खील्या त्यारे,
प्रभु तारा वचननी, बलिहारी बलिहारी तारी ज्योति. २
तारी कांति जोतां जोतां, मारी आंखो कदीना भराये,
तारुं अमृत पीतां पीतां मारुं मनडुं कदीना धराये,
एवो अलबेलो देदार, जाणे जोऊंवारंवार,
एवी तारा दर्शननी, बलिहारी बलिहारी तारी ज्योति. ३
मने सपनामां पण स्वामी, तारो थाये सदाये समागम,
एनी मस्ती एवी मजानी, बीजी कांई रहे ना गतागम,
ज्यारे पामुं तारो प्यार, त्यारे भूलुं आ संसार,
एवी तारा मिलननी, बलिहारी बलिहारी तारी ज्योति. ४
मारा सूनां सूनां जीवनमां, तारी याद भरे छे खुशाली,
मारा अंधारा जीवनमां, तारी दीप्ति करे छे दीवाली,
लेतां एकज तारुं नाम, हैयुं पामे छे विसराम
एवी तारा स्मरणनी, बलिहारी बलिहारी तारी ज्योति. ५

१८. तने रात दिवस हुं याद करुं...

तने रात दिवस हुं याद करुं, शंखेश्वर पारस नाथ प्रभु,
तारा दर्शननी हुं आश करुं, मारा दिलनी तने शुं वात करुंतने रात० १
अन्तर्यामी जगविश्रामी, सहु जीवनो प्रभु तुं हितकामी;
कलिकालनो छे तुं कल्पतरुं, वीतराग प्रभु छो विध्नहरुं.तने रात० २
मोहे घेर्या लोचन मारा, कीधा नहि में दर्शन तारा;
एथी दुःखभर्युं जीवन मलियुं, बहु पाप करम मुझने नडीयुं.तने रात० ३
ओ दीन बन्धु करुणा सागर, शरणागतना स्नेह सुधाकर;
स्वामी भक्त बनी नमतो तुजने, दुःख मुक्त तुरत करजे मुझने.तने रात० ४

१९. मारी आँखोमां पार्श्वनाथ आवजो...

मारी आंखोमां पार्श्वनाथ आवजो रे, हुं तो पापणना पुष्पे वधावुं,
मारा हैयाना हार बनी आवजो रे, हुं तो पापणना पुष्पे वधावुं...
तमे वामादेवीना जाया, त्रण लोकमां आप छवाया;
मारा मनना २ मंदिरमां पधारजो रे...हुं तो...१
भवसागर छे बहु भारी, झोला खाती आ नावडी मारी;
नैयाना २ सुकानी बनी आवजो रे...हुं तो...२
मने मोहराजाए हराव्यो, मने मारग तारो भुलाव्यो;
जीवनना २ सारथि बनी आवजो रे...हुं तो...३
मारा दिलमां रह्या छो आप, मारा मनमां चाले छे तारो जाप;
मारा मनना २ मयूर बनी आवजो रे..हुं तो...४

२०. मारा प्रभुनी आँखे जोई...

मारा प्रभुनी आँखे जोई, करुणानी धार रे, लई जाशे सहुने सिद्धिशिला मोझार रे...
ज्यारे वरसी करुणा, मंदिर केरा स्थानमां;
मंदिर बनी गयुं समवसरण धामरे... मारा प्रभुनी...१
ज्यारे वरसी करुणा, अणु परमाणु पर;
मंदिर मूर्तिमां थयो, प्रभु केरो वास रे... मारा प्रभुनी...२
ज्यारे वरसी करुणा, मानवी ना मन पर;
मन थयुं स्थिर धीर, पाम्या केवलज्ञान रे... मारा प्रभुनी...३
ज्यारे वरसी करुणा, नारकीना जीव पर;
जीवो सहु शाता पामी, जाशे मुक्ति धाम रे... मारा प्रभुनी...४

२१. शंखेश्वर का नाथ है हमारा तुम्हारा...

शंखेश्वर का नाथ है हमारा तुम्हारा...तुम्हारा...हमारा.
पार्श्वप्रभु के दरिसन पाके जीवन है सुखकारा...
कैसी सुंदर काया, भक्तों के मन भाये,
कानों मे कुंडल सोहे, मस्तके मुकुट सुहाये,
मनकी इच्छा पूरी होवे, आये द्वार तिहारा. १
इस तीरथ के कंकर, पत्थर हम बन जाये,
इन पावों से चलकर, तीरथ तेरे आये,
सच्चे मनसे ध्यान लगाये, होवे जगसे न्यारा. २
तीरथ के दरिसन को, भक्त हजारों आये,
करके प्रभुका पूजन, अपने पाप खपाये,

युवक मंडल आज पुकारे, तारो तारणहारा. ३

२२. झीलमीलता तारलानुं देरासर...

झीलमीलता तारलानुं देरासर होशे, एमां मारा प्रभुजीनी आंगी रचाशे...
अमे अमारा प्रभुजीनी सोनाथी सजावीशुं; सोनुं ना मळे तो अमे रूपाथी सजावीशुं;
रूपाथी सुंदर हीरला होशे, एमां मारा प्रभुजीनी आंगी रचाशे...१
अमे अमारा प्रभुजीने फूलोथी सजावीशुं; फूलो ना मळे तो अमे कलीओथी सजावीशुं;
कलीओथी सुंदर डमरो होशे, एमां मारा प्रभुजीनी... आंगी रचाशे. २
अमे अमारा प्रभुजीने मंदिरमां पधरावीशुं; मंदिरमां पधरावी अमे हैयामां पधरावीशुं;
हैयाथी सुंदर भाव मारा होशे; एमा मारा प्रभुजीनी भावना भणाशे. ३

२३. आ पारस मारा पोताना...

आ पारस मारा पोताना, मारा पोताना नही बीजाना...आ पारस. १
तमे वामादेवीना नंद भले, तमे अश्वसेन कुलचंद भले पण...आ पारस. २
तमे वढियार देश नरेश भले, तने पूजे आखो देश भले पण...आ पारस. ३
भले राजा महारजा चरणे नमे, ने चोंसठ इन्द्रो चरणे चूमे पण...आ पारस. ४
तमे वाराणसीना राजा भले, तमे त्रण भुवन महाराजा भले पण...आ पारस. ५
तारा एकसोने आठ नामो भले तारा गामे गाम धाम भले पण...आ पारस. ६
तमे धरणेन्द्र देवना देव भले, तुमे पद्मामाताना प्यारा भले पण...आ पारस. ७
तमे मणिभद्रवीरना प्यारा भले तमे सकलसंघना प्यारा भले...आ पारस. ८

२४. देखी श्री पार्श्वतणी मूरती...

देखी श्री पार्श्वतणी मुरती अलबेलडी, उज्वल भयो अवतार रे,
मोक्षगामी भवथी उगारजो ! शिवगामी भवथी उगारजो. १
मस्तके मुकुट सोहे काने कुंडलीया, गले मोतीयन का हार रे. २
पगले पगले तारा गुणों संभारता, अंतरना विसरे उचाट रे. ३
आपना दरिशने आत्मा जगाड्यो, ज्ञान दीपक प्रगटावरे. ४
आत्मा अनंत प्रभु आपे उगारिया, तारो अमने भवपार रे. ५

२५. आज आनंद भयो...सुजश रंगायो है...

आज आनंद भयो, प्रभु को दर्श लह्यो,
रोम रोम शीतल भयो...
प्रभु चित्त आये है... प्रभु चित्त आये है, व्हाला चित्त आये है. आज. १
मनहुं ते धार्या तोहे, चलके आयो मन मोहे,
चरण कमल तेरो, मन में ठहरायो है, व्हाला चित्त आये है. आज. २
अकल अरूपी तुंहि, अकल-अमूरती योही...
निरख-निरख तेरो, सुमति सुमिलायो है, व्हाला चित्त आये है. आज. ३
सुमति-स्वरुप तेरो, रंग भयो एक अनेरो...
वाइ रंग आत्म प्रदेशे, सुजश रंगायो है, व्हाला चित्त आये है. आज. ४

२६. नाथ तारा विना मारा नयनो भीना...

नाथ तारा विना मारा नयनो भीना; तारा दर्शन विना...
मारुं मन लागेना. नाथ तारा.
तुजने निरख्या विना, नेन अश्रु भीना,
तारा विण सुना-सुना,
जीवननी व्यथा नाथ तारा.

तारा वियोगे तडपे आ दिल माहरुं,
मारो आतम करे छे... स्मरण ताहरुं,
मुझने मझधारे तारो सहारो मल्यो २
भवसागरमां एक ज किनारो मल्यो...
तारा दर्शन विना मारुं मन लागे ना नाथ तारा विना. १
कर्म संयोगे भवमां हुं भूलो पड्यो;
पार उतारवा ना कोई मारग मल्यो;
करुणा-सागर तुं एक आधार मल्यो २
तारी भक्तिथी भवनो आ फेरो टल्यो...
तारा दर्शन विना मारुं मन लागे ना नाथ तारा विना. २
तुजने समर्या करुं मारा हर श्वासमां, (तुं छे वासमां)
तारा विश्वासमां जीवुं आशमां,
तारा विना अकारुं लागे छे जीवन,
मारा दिलमां हवे बस छे तारुं स्मरण. तारा दरिशन.
ए आश हैये जागी, भ्रमणा हवे तो भागी,
मारा प्रभुने जोतां, भणवानी तलप लागी,
थयुं ज्यां तारुं दर्शन, सर्वस्व तुजने अर्पण,
धन्य बन्युं छे जीवन, पावन छे मारा तनमन,
प्रभुजी तुजने जोवां, पातिक भवोना खोवा,
अधिर छे मनडुं मारुं, प्रत्यक्ष तने निरखवा,
हैये उमंग जाग्यो, संसारनो भय भाग्यो,
हे दिनबंधु तारा, चरणोमां आवी लाग्यो.
तारा घणा उपकारो परमात्मा,
भूल्या नहीं भूलाये कहे मारो आतमा,
तारा दर्शन विना मारुं मन लागेना... नाथ तारा विना.

२७. केवा केवा दुःखडा स्वामी

केवा केवा दुःखडा, स्वामी में सह्यां नारकीमां,
एक रे जाणे छे, मारो आत्मा परमात्मा.
लबकारा लेती काली वेदनाओ सहेता-सहेता,
वरसोना वरसो स्वामी में विताव्यां त्रासमां,
इ...रे मलकनुं ज्यारे, पुरू थयुं आयखु त्यां,
जनम थयो रे मारो जानवरना लोकमां (२)
दुःखडा निवारो मारा जनम-मरणना परमात्मा।।
केवा-केवा जुल्मो वेठ्यां, जानवर बनीने स्वामी
एक रे जाणो छे मारो आत्मा परमात्मा,
बोजो अलखामणो ने लाकडीना मार खाता,
वहेती'ती आसुंडानी धार मारी आंखमां,
इ...रे मलकनुं ज्यारे, पुरू थयुं आयखुं त्यां,
जनम थयो रे मारो देवताना लोकमां (२)
दुःखडा निवारो मारा जनम मरणना परमात्मा,
केवा-केवा मंथन स्वामी, में कर्या देवलोकमां

एक रे जाणे छे मारो आत्मा परमात्मा।।
रिद्धि ने सिद्धि तोये तमारे वियोगे स्वामी,
जन्मारो गाल्यो ज्यारे घोर कारावासमां,
इ...रे मलकनुं ज्यारे, पूरूं थयुं आयखुं त्यां,
जनम थयो रे मारो मानवीना लोकमां
दुःखडा निवारो मारो, जनम मरणना परमात्मा।।
केवा-केवा नाटक स्वामी, हुँ करू आ जनममां,
एक रे जाणे छे मारो आत्मा परमात्मा,
मनडानी माया काजे करवा पडे छे मारे,
डगलेने पगले नवला रूप आ संसारमां,
इ...रे मलकनुं ज्यारे, पुरू थयुं आयखुं त्यां,
तेडावो मुजने स्वामी त्यां तमारा लोकमां,
दुःखडा निवारो मारा जनम मरणना परमात्मा,
केवा-केवा वरणनो स्वामी में सुण्या ए मलकना,
अधीरो बन्यो छे मारो आत्मा परमात्मा,
जनम-जरा मृत्यु केरा दुःखडा ने बदले स्वामी,
रहेवानुं त्यां तो सुखना शाश्वता सहेवासमां,
चार-चार गतिना फेरा हवे नथी फरवा मारे,
करवो छे कायमनो वसवाट पंचम लोकमां,
दुःखडा निवारो मारा जनम-मरणना परमात्मा,

२८. अवतार मानवीनो

अवतार मानवीनो, फरीने नहीं मले,
अवसर तरी जवानो फरीने नहीं मले, अवातर...१
सुरलोक मांये ना मले, भगवान कोईने
अहीं आ मल्या प्रभुते फरीने नहीं मले. अवातर...२
लई जाय प्रेमथी ने, कल्याण मारगे,
संगाथ आ गुरुनो फरीने नहीं मले. अवातर...३
जे धरम आचरीने करोडो तरी गया,
आवो धरम अमूलो फरीने नहीं मले. अवातर...४
करशुं धरम निराते, कहे तुं गुमानमां,
जे जाय छे खडीते फरीने नहीं मले. अवातर...५

२९. तारे शरणे आव्यो छुं

तारा शरणे आव्यो छुं स्वीकारी ले, पछी लईजा प्रभु तारा धाममां,तारा शरणे
तारा दर्शन विण मुजने, चेन ना आवे घडी घडी नाथ तारो विरह सतावे,
हुं अहीं सबडुं ने तुं त्यां बिराजे छे, क्यांरे आवुं तो होतुं हशे प्रेममांतारा शरणे १
तारा विण स्वामी मुजथी, एकलुं रहेवाय ना,
वियोगनी वसमी घडीओ, मुजथी गणाय ना,
पकड्यो पालव छे पानु निभावी रे तारा शरणे २
तारी मारी प्रितडी छे, जुगजुग पुराणी, तारी मारी प्रितनी आ, अमर कहानी,
क्यारे मलवुं छे ए तुं जणावी दे तारा शरणे ३
अंतरनी वात मारे, कोने जईने कहेवी, हैयानी वेदना मारे, केम करी सहेवी,

अंतरयामी छे प्रतीती करावी दे तारा शरणे ४
क्यारे मले नाथ तुं तो जोउ तारी वाटडी, रोईने राती थई छे, हवे मारी आंखडी,
सकलसंघनी विनती तुं मानी ले तारा शरणे ५

३०. मेरा जीवन तेरे हवाल

मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु ईसे पल पल तुंही संभाले. २
भवसागर में जीवन नैया डोल रही है ओ रखवैया २
ईसे अब तुं आके बचाले... प्रभु इसे...
मोह माया के बंधन तोडो, हे प्रभु अपने शरण मे लेलो २
इस पापीको अपनालो... प्रभु इसे...
ये जीवन धन तुमसे पाया, सबकुछ तेरा नाही पराया,
इसे स्वीकारो रखवैया... प्रभु इसे...

३१. नाम है तेरा तारणहारा

नाम है तेरा तारणहारा, कब तेरा दर्शन होगा,
जिनकी प्रतिमा इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा, नाम है.
तुमने तारे लाखों प्राणी, ये संतो की वाणी है,
तेरी छबी पर मेरे भगवन, ये दुनिया दीवानी है,
भाव से तेरी पूजा रचाऊं, जीवन में मंगल होगा. जिनकी. नाम है. १
सुरवर मुनिवर जिनके चरणे निशदिन शीश झुकाते है,
जो गाते है प्रभु की महिमा, वो सब कुछ पा जाते है
अपने कष्ट मिटाने को, तेरे चरणों में वंदन होगा. जिनकी.नाम है. २
मन की मुरादे लेकर स्वामी, तेरी शरण में आये हैं
श्री सिद्धचक्र मंडल के बालक, तेरे ही गुण गाते हैं,
भवसे पार उतरने को, तेरे गीतों का सरगम होगा. जिनकी.नाम है. ३

३२. तमे तो अमारा

तमे तो अमारा, अमे तो तमारा, संबंधो छे आपणा, पुराणा-पुराणा...
एक युगमां आपणे साथे हता रे, दिवसो मिलनना, केवा रे जता रे
समयनी संगाथे, भूलाणा भूलाणा. तमे तो. १
अरिहंत पदने पाम्या तमे तो, संसार मायामां, रही गया अमे तो,
अमे क्रोध लोभे, मराणा मराणा. तमे तो. २
तोड्या तमे भवोभव केरा चक्कर
मारा नसीबे आ संसार नक्कर
मोह मायामां, अमे फसाणा फसाणा. तमे तो. ३
तारा मिलनना, अरमाने घूमु,
क्यारे आवीने तारा चरणोने चूमु
राही विरहना, अश्रु वेराणा वेराणा. तमे तो. ४

३३. दरिशन देजो नाथ...

दरिशन देजो नाथ... दर्शन देजो नाथ,
भक्तों तारा तने पोकारे-दर्शन देजो नाथ,
अंतरनी तमे आशा पूरजो, दुःखडा सौना हरजो,
दीनदयालु दादा मारा, रक्षा सौनी करजो,
भूलुं ना तने नाथ... छूटे ना तारो साथ. भक्तो. १

प्रभु तारा चरणोंमां हुं, मांगु तारी सेवा,
शंखेश्वरना पार्श्वप्रभुजी, हो देवाधिदेवा,
लईए तारुं नाम, धरीए तारुं ध्यान. भक्तो. २
अमी भरेली आँखडी तारी, वरसे अमृतधारा,
कृपानिधि करुणासागर, जगना पालनहारा,
देजो मोक्षनुं धान, हैये पूरजो हाम. भक्तो. ३

३४. हालो अमे शंखेश्वर जवानां...

हालो रे हालो ! अमे शंखेश्वर जवानां...
शंखेश्वर जवाना, अमे नाथने मलवानां,
नाथने मलवानां, अमे व्हालाने मलवानां,
हैयानी वात एना कानमां कहेवानां...हालो रे हालो...
पेला शंखेश्वरना दादा अमने रोज बोलावे रोज बोलावे दर्शन करवा बोलावे
रोज बोलावे पूजा करवा बोलावे रोज बोलावे यात्रा करवा बोलावे...पेला पारसनाथ
अमने बोलावे दादा तमने बोलावे तमने बोलावे दादा सौने बोलावे...पेला पारसनाथ

३५. जय जय श्री पारसनाथ (धून)

जय जय श्री पारसनाथ... प्रेम से बोलो पारसनाथ... धीरे से बोलो पारसनाथ... हैये हैये
पारसनाथ... अणु-अणुमां पारसनाथ... परमाणुमां पारसनाथ
शंखेश्वरमां पारसनाथ...जीरावलामां पारसनाथ...बोलो रे बोलो पारसनाथ
भाव से बोलो पारसनाथ...केम नथी बोलता पारसनाथ... जोर से बोलो पारसनाथ
कर्म खपावे पारसनाथ... मारा प्यारा पारसनाथ...सुखडां आपे पारसनाथ... दुःखडा कापे
पारसनाथ... सहुना प्यारा पारसनाथ... मारा हैये पारसनाथ...
सहुना हैये पारसनाथ... दानव बोले पारसनाथ...मानव बोले पारसनाथ
श्वासे श्वासे पारसनाथ... रोमे रोमे पारसनाथ... शुं शुं आपे? पारसनाथ
समकित आपे पारसनाथ...ज्ञान आपे पारसनाथ...दीक्षा आपे पारसनाथ
दर्शन आपे पारसनाथ... संयम आपे पारसनाथ...ओगो आपे पारसनाथ...
मोक्ष आपे पारसनाथ... पूर्व बोले पारसनाथ... उत्तर बोले पारसनाथ...
पश्चिम बोले पारसनाथ... दक्षिण बोले पारसनाथ... धरती बोले पारसनाथ...
आकाश बोले पारसनाथ... चंदा बोले पारसनाथ... सूरज बोले पारसनाथ...
ग्रहो बोले पारसनाथ... ज्यां जुओ त्यां पारसनाथ... जय जय श्री पारसनाथ...

३६. पार्श्वनाथ जाप स्मरण...

ॐ नमो भगवते... श्री पार्श्वनाथाय, पार्श्वनाथाय प्रभु पार्श्वनाथाय
शंखेश्वर मंडण पार्श्व० जीरावलामंडण पार्श्व० नागेश्वर मंडण पार्श्व० नाकोडा मंडण पार्श्व०
धरणेन्द्र पद्मावती परिपूजिताय, शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व० ॐ नमो...
।। शंखेश्वर शरणं णमो जिणाणं, पार्श्वनाथ शरणं णमो जिणाणं ।।
।। ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। शासन ध्वज वंदन गीत ।।

'जैनं जयति शासनं' की, अलख जगानी जारी है
हे जिन शासन! तूं है मैया, तेरी ही फुलवारी है, वंदे शासनम् जैनम् शासनम्....१
हिमालय सा उत्तुंग है वो, जिनशासन हमारा है,
गंगा सा निर्मल और पावन, जिनशासन हमारा है,
पतितो को भी पावन करता, शासन वो सहारा है,
तारणहारा तारणहार, जिनशासन हमारा है,
देखो भैया नौजवानो, पापों को चिनगारी है. हे जिन शासन...२
रोहिणिया जैसा चोर लुटेरा, उसको तूने तारा था,
अर्जुनमाली सा घोर पापी, उसको भी उगारा था,
क्रोधी विषधर चंडकौशिक को, तूने ही सुधारा था,
कामी रागी स्थूलीभद्र को, तूंने ही स्वीकारा था,
आओ झंडा जिनशासन का, फैलाने की बारी है...हे जिन शासन...३
मिटा देंगे हस्ति उसकी, जो हमसे टकरायेंगा,
अहिंसा की टक्कर में देखो, हिंसा नाम मिट गायेंगा,
गली-गली और गांव गांव में, बच्चा बच्चा गायेंगा,
वीर प्रभुका शासन पाकर, मुक्ति सुख को पायेगा,
दुःखी दुनिया मुक्त बनेगी, शासन की बलिहारी है...हे जिन शासन...४
ना समझो तुम कायर हमको, शेरों के भी शेर हैं,
न्योच्छावर कर देते तन-मन, वीरों के भी वीर हैं,
देव गुरू अपमान कभी ना, सहते हम बलवीर हैं,
प्राण फना हो जाये चाहे, मरने को भडवीर हैं,
जिनशासन का झंडा ऊंचा, लहराओ तैयारी हैं...हे जिन शासन...५
विश्व शांति फैलाने वाला, जैन धर्म हमारा हैं,
शांति मार्ग दिखलाने वाला, जैन धर्म ही प्यारा हैं,
विश्व धर्म कहलाये सो ही, जैन धर्म सितारा हैं,
प्राणी मात्र का चंदा सूरज, जैन धर्म हमारा हैं,
गर्व से कहो दोस्तों मिल हम, जिनशासन पूजारी है...हे जिन शासन...६
सुदी ग्यारस वैशाखमाह की, ध्वजवंदन सब करलो तुम,
मैत्री भाव को दिल में बसाकर, शत्रु भाव मिटाओ तुम,
प्राणी मात्र को गले लगाकर, मुक्ति मार्ग बताओ तुम,
'सूरिगुणरत्न की रश्मि' पालो, जनम जनम सुख पाओ तुम,
हे जिनशासन! तुझे को वंदन, तेरा ध्वज जयकारी है...हे जिन शासन...७